Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ ध्यानयोगो (आत्मसंयमयोगो) नाम षष्ठोऽध्यायः ॥

श्री भगवान् उवाच ।

अनाश्रितः कर्मफलम् कार्यम् कर्म करोति यः ।

सः संन्यासी च योगी च न निर् - अग्निः न च अक्रियः ॥ ६ - १ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavaan	The Blessed Lord	श्री भगवान् (ने)	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
अनाश्रितः	Ana-AashritaH	not depending on	आश्रय न लेकर	आश्रय न घेता
कर्मफलम्	Karmaphalam	favourable outcome of action	कर्मफल का	कर्मफळाचा
कार्यम्	Kaaryam	bounden / obligatory	करने योग्य	कर्तव्य
कर्म	Karma	duty / action	कर्म	कर्म
करोति	Karoti	does	करता है	करतो
यः	YaH	who	जो (पुरुष)	जो (पुरुष)
सः	SaH	he	वह	तो
संन्यासी	Sannyaasee	ascetic	संन्यासी	संन्यासी
च	Cha	and	तथा	आणि
योगी	Yogee	yogi	योगी (है)	योगी (आहे)
च	Cha	and	और केवल	परंतु
न	Na	not	(संन्यासी) नहीं	(तो संन्यासी) नव्हे
निर् - अग्निः	Nir – AgniH	without fire	अग्निका त्याग करनेवाला	अग्नीचा त्याग करणारा
न	Na	not	(योगी) नहीं है	(योगी) नव्हे
च	Cha	and	तथा	तसेच
अक्रियः	AkriyaH	without action	क्रियाओं का त्याग करनेवाला	क्रियांचा त्याग करणारा

अन्वय :- यः कर्मफलम् अनाश्रितः कार्यम् कर्म करोति, सः संन्यासी च योगी च, न निर् - अग्निः, अक्रियः च न ॥ ६ - १ ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "He who performs his solemn responsibility without depending upon a favourable outcome of his action, he is an ascetic and yogi; not the one without sacred fire and certainly not the one without action."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा, " जो पुरुष, कर्मफल के भोग के लिए, कर्म नहीं करता है, वही सच्चा संन्यासी तथा योगी है। केवल अग्नि का त्याग करनेवाला संन्यासी नहीं होता, तथा केवल क्रियाओं का त्याग करनेवाला भी योगी नहीं होता।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " कर्माच्या फळाची अपेक्षा न करता जो आपले कर्तव्यकर्म करतो तोच संन्यासी व तोच योगी होय. यज्ञयागादी कर्मे सोडून देणारा व काहीही कर्म न करणारा खरा संन्यासी नव्हे व योगी नव्हे."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

फळीं आश्रय सोडूनि करी कर्तव्य कर्म जो।

तो संन्यासी तथा योगी न जो निर्यज्ञ निष्क्रिय ॥ ६ - १ ॥

यम् संन्यासम् इति प्राहुः योगम् तम् विद्धि पाण्डव ।

न हि असन्यस्त सङ्कल्पः योगी भवति कश्चन ॥ ६ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यम्	Yam	which	जिस को	ज्याला
संन्यासम्	Sannyaasam	renunciation	संन्यास	संन्यास
इति	Iti	this	ऐसा	असे
प्राहुः	PraahuH	(they) call	कहते हैं	म्हणतात
योगम्	Yogam	Yoga	योग	योग (असे म्हणतात)
तम्	Tam	that	उसी को	त्यालाच
विद्धि	Viddhi	know	(तुम यह) जान लो	(हे तू) जाण
पाण्डव	PaaNDava	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
न	Na	not	नहीं	नाही
हि	Hi	indeed / verily	क्योंकि	कारण
असन्यस्त - सङ्कल्पः	Asanyasta – SankalpaH	one who has not renounced selfish thoughts	संकल्पों का तथा स्वार्थ कर्मों का त्याग न करनेवाला	संकल्पांचा (स्वार्थी कर्मांचा) त्याग न करणारा
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
भवति	Bhavati	becomes	होता	होतो
कश्चन	Kashchana	anyone	कोई भी (पुरुष)	कोणताही (पुरुष)

अन्वय :-

हे पाण्डव ! यम् संन्यासम् इति प्राहुः , तम् योगम् विद्धि , कश्चन असन्यस्त - सङ्कल्पः योगी न भवति हि ॥ ६ - २ ॥

English translation: -

O Arjuna! Know that as Yoga, which is called as Sanyasa (renunciation); for none becomes a Yogi without renouncing Sankalpa (selfish thoughts).

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिसको संन्यास कहते हैं , उसीको तुम निष्काम कर्मयोग जान लो । क्योंकि , स्वार्थ के त्याग के बिना , कोई भी पुरुष , कर्मयोगी नहीं हो सकता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पंडुपुत्रा ! ज्याला संन्यास म्हणतात , तोच योग असे समज . कारण , मनाच्या स्वार्थ - संकल्पाचा त्याग केल्याशिवाय , कोणीही योगी होत नाही .

विनोबांची गीताई :-

संन्यास म्हणती ज्यास योग तो जाण पांडवा ।
सोडिल्याविण संकल्प कोणी योगी न होतसे ॥ ६ - २ ॥

आरुरुक्षोः मुनेः योगम् कर्म कारणम् उच्यते ।

योगारूढस्य तस्य एव शमः कारणम् उच्यते ॥ ६ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
आरुरुक्षोः	AarurukshoH	wishing to climb	आरूढ़ होनेकी इच्छावाले	आरूढ होण्याची इच्छा असणाऱ्या
मुनेः	MuneH	of a sage / of a meditative natured person	मननशील पुरुष के लिये	मननशील पुरुषाला
योगम्	Yogam	Yoga	योग में	कर्मयोगावर
कर्म	Karma	action	(योग की प्राप्ति में निष्कामभाव से) कर्म (करना ही)	(योगाच्या प्राप्तीसाठी निष्काम भावनेने) कर्म
कारणम्	KaaraNam	means	हेतु	(साधन) हेतू
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	सांगितला आहे
योगारूढस्य	Yoga-AaruuDhasys	of one who has attained Yoga	योगारूढ़ पुरुष का	योगारूढ पुरुषाचा
तस्य	Tasya	his	(और योगारूढ़ हो जानेपर) उस	त्या
एव	Eva	alone	वही (कल्याण में)	हाच
शमः	ShamaH	quietude / quiescence	संकल्पों का अभाव	संकल्पांचा अभाव
कारणम्	KaaraNam	the cause	हेतु	(साधन) कारण
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :- योगम् आरुरुक्षोः मुनेः कर्म कारणम् उच्यते ; योगारूढस्य तस्य एव शमः कारणम् उच्यते ॥ ६ - ३ ॥

English translation:-

For a seeker who wishes to master Yoga, action is said to be the means; for the one who is established in Yoga, inaction (equilibrium of mind, body and intellect) is said to be the means.

हिन्दी अनुवाद :-

निष्काम कर्मयोग में , आरूढ़ होने की इच्छावाले मननशील पुरुष के लिये , समत्वयोग की प्राप्ति में , निष्कामभाव से कर्म करना ही हेतु तथा साधन कहा जाता है ; और योगारूढ़ हो जानेपर उस साधक के लिए समत्व अर्थात् मानसिक संतुलन , आत्मसंयम ही ईश्वरप्राप्ति का साधन बन जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ध्यानयोगावर आरूढ होऊ इच्छिणाऱ्या मुमुक्षूला फलनिरपेक्ष कर्म हे साधन सांगितले आहे ; आणि तो कर्माभ्यासाने योगारूढ झाला म्हणजे मनाची शांती हे त्याचे ज्ञानपरिपक्वतेचे साधन सांगितले आहे .

विनोबांची गीताई :-

योगावरी चढूं जातां कर्म साधन बोलिलें ।

योगी आरूढ तो होतां शम साधन बोलिलें ॥ ६ - ३ ॥

यदा हि न इन्द्रियार्थेषु न कर्मसु अनुषज्जते ।

सर्वसंकल्प संन्यासी योगारूढः तदा उच्यते ॥ ६ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदा	Yadaa	when	जिस काल में	ज्या वेळी (साधक)
हि	Hi	indeed	ही	तसेच
न	Na	not	न तो	नाही
इन्द्रियार्थेषु	Indriya - ArtheShu	in sense objects	इन्द्रियों के भोगों में	इंद्रियांच्या भोगांमध्ये
न	Na	not	न	नाही
कर्मसु	Karmasu	in actions	कर्मों में	कर्मामध्ये
अनुषज्जते	AnuShajjate	is attached	आसक्त होता है	आसक्त होतो
सर्वसंकल्प - संन्यासी	Sarva-Sankalpa – Sannyaasee	one who has renounced all thoughts	सर्व संकल्पों का त्यागी पुरूष	सर्व संकल्पांचा त्याग करणारा (तो पुरुष)
योगारूढः	Yoga-AaruuDhaH	established in Yoga	योगारुढ़	योगारूढ
तदा	Tadaa	then	उस काल में	त्यावेळी
उच्यते	Uchyate	is said	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :-

यदा हि इन्द्रियार्थेषु (च) कर्मसु न अनुषज्जते, तदा सर्वसंकल्प संन्यासी योगारूढः उच्यते ॥ ६ - ४ ॥

English translation:-

When a man is not attached to sense-objects or actions, having renounced all selfish thoughts, then he is said to be established in Yoga (have attained to Yoga).

हिन्दी अनुवाद :-

जब मनुष्य, इन्द्रियों के भोगों में तथा कर्मफल में, आसक्त नहीं रहता है; तब सम्पूर्ण संकल्पों का त्याग करनेवाले को, योगी कहते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

जेव्हा मनुष्य इंद्रियांच्या विषयात व नित्य कर्मांमध्ये आसक्त होत नाही आणि सर्व संकल्पांचा त्याग करतो तेव्हा त्याला योगारूढ असे म्हणतात.

विनोबांची गीताई :-

कर्मांत ज़ो अनासक्त विरक्त विषयीं असे।

संकल्प सुटले तेंव्हां तो योगारूढ बोलिला ॥ ६ - ४ ॥

उद्धरेत् आत्मना आत्मानम् न आत्मानम् अवसादयेत् ।

आत्मा एव हि आत्मनः बन्धुः आत्मा एव रिपुः आत्मनः ॥ ६ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
उद्धरेत्	Uddharet	let (him) lift	उद्धार करे	उद्धार करावा
आत्मना	Aatmanaa	by his own self	अपने द्वारा	आपणच
आत्मानम्	Aatmaanam	the self	अपना (संसार समुद्र से)	(संसारसागरातून) आपला
न	Na	not	न	नये
आत्मानम्	Aatmaanam	the self	और अपने को	आपणाला
अवसादयेत्	Avasaadayet	let (him) lower	अधोगति में डाले	(आणि) अधोगतीला नेणे
आत्मा	Aatmaa	his self	आप	आपण
एव	Eva	only	ही तो	स्वतःच
हि	Hi	indeed	क्योंकि (यह मनुष्य)	कारण (हा मनुष्य)
आत्मनः	AatmanaH	his (of the self)	अपना	आपला
बन्धुः	BandhuH	friend	मित्र (है)	मित्र (आहे)
आत्मा	Aatmaa	the self	और आप	आपण
एव	Eva	only	ही	(तसेच) स्वतःच
रिपुः	RipuH	enemy	शत्रु (है)	शत्रू (आहे)
आत्मनः	AatmanaH	his (of the self)	अपना	आपला

अन्वय :-

आत्मना आत्मानम् उद्धरेत् , आत्मानम् न अवसादयेत् । आत्मा एव हि आत्मनः बन्धुः , आत्मा एव आत्मनः रिपुः ॥ ६ - ५ ॥

English translation:-

Let a man raise / lift himself by his own Self alone, let him not debase / lower himself; for this Self (Atman) alone is the friend of oneself (if he raises himself) otherwise Self alone is his foe / enemy (if he lowers down himself).

हिन्दी अनुवाद :-

हर मनुष्य अपने मन और बुद्धि के द्वारा , अपना संसार - समुद्र से उद्धार करे और अपने को अधोगति में न डाले ; क्योंकि , मनुष्य के लिये आत्मा ही तो मित्र है और आत्मा ही शत्रु है ।

मराठी भाषान्तर :-

माणसाने स्वतःने स्वतःचा उद्धार करावा , स्वतःचे कधीही अधःपतन (नाश) होऊ देऊ नये ; कारण आत्माच आपला मित्र तथा शत्रू आहे. (आपण स्वतःच आपले मित्र आणि स्वतःच आपले शत्रू आहोत .)

विनोबांची गीताई :-

उद्धरावा स्वयें आत्मा खचूं देऊं नये कधी ।

आत्मा चि आपुला बंधु आत्मा चि रिपु आपुला ॥ ६ - ५ ॥

बन्धुः आत्मा आत्मनः तस्य येन आत्मा एव आत्मना जितः ।

अनात्मनः तु शत्रुत्वे वर्तेत आत्मा एव शत्रुवत् ॥ ६ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
बन्धुः	BandhuH	friend	मित्र (है)	मित्र (आहे)
आत्मा	Aatmaa	the self	आप	स्वतःच
आत्मनः	AatmanaH	of the self	जीवात्मा का (तो वह)	जीवात्म्याला
तस्य	Tasya	his	उस	त्या
येन	Yena	by whom	जिस	ज्या
आत्मा	Aatmaa	the self	मन और इन्द्रियों सहित अपना शरीर	स्वतः (मन व इंद्रियांसह स्वतःचे शरीर)
एव	Eva	even	ही	केवळ
आत्मना	Aatmanaa	by the self	जीवात्मा द्वारा	स्वतः (जीवात्म्याने)
जितः	JitaH	conquered	जीता हुआ है	जिंकले
अनात्मनः	AnaatmanaH	of unconquered self	जिसके द्वारा मन तथा इन्द्रियों सहित अपना शरीर नहीं जीता गया है	ज्याने स्वतःला (मन व इंद्रियांसह स्वतःचे शरीर) जिंकलेले नाही
तु	Tu	but	परन्तु	परन्तु
शत्रुत्वे	Shatrutve	in the place of an enemy / hostile one	शत्रुता में	शत्रुत्व / वैर
वर्तेत	Varteta	becomes / would remain	बरतता है	करतो
आत्मा	Aatmaa	the self	आप	त्याचे तो स्वतःच
एव	Eva	even	ही	केवळ
शत्रुवत्	Shatruvat	like an enemy	शत्रु के समान	शत्रूप्रमाणे

अन्वय :-

येन आत्मना एव आत्मा जितः , तस्य आत्मनः बन्धुः आत्मा , अनात्मनः तु शत्रुत्वे आत्मा एव शत्रुवत् वर्तेत ॥ ६ - ६ ॥

English translation:-

The Self (Aatman) is the friend of the self for him who has conquered himself (his own physical body, mind and intellect) by the Self, but to the unconquered self, the Self poses like an external foe / enemy.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस जीवात्मा द्वारा , मन और इन्द्रियों सहित शरीर जीता हुआ है , उस जीवात्मा का तो वह आप ही मित्र है ; परन्तु जिस के द्वारा मन तथा इन्द्रियों सहित शरीर नहीं जीता गया है , उस के लिये वह आप ही शत्रु के समान बरतता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याने आपणच आपल्या स्वतःला (आपले शरीर , मन आणि बुद्धिमत्ता यांना) जिंकले आहे , तो आपल्या स्वतःचा बंधू व मित्र होतो ; पण ज्याने स्वतःला जिंकले नाही , तो स्वतःच शत्रूप्रमाणे स्वतःचे वैर करतो .

विनोबांची गीताई :-

जिंकुनी घेतला आत्मा बंधु तो होय आपुला ।
सोडिला तो ज़री स्वैर शत्रुत्व करितो स्वयें ॥ ६ - ६ ॥

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।

शीतोष्ण - सुख - दुःखेषु तथा मान - अपमानयोः ॥ ६ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
जितात्मनः	JitaatmanaH	of self controlled	ऐसे स्वाधीन आत्मावाले पुरुष के	मन ,बुद्धी , शरीर व इंद्रिये ही ज्याच्या ताब्यात असतात (अशा पुरुषाच्या)
प्रशान्तस्य	Prashaantasya	of peaceful	(जिसके अन्तःकरण की वृत्तियाँ) भलीभाँति शान्त (हैं) उसे	(ज्याच्या अंतःकरणाच्या वृत्ती) चांगल्या प्रकारे शांत असणाऱ्याला
परमात्मा	Paramaatmaa	supreme Self	सच्चिदानन्दघन परमात्मा	सच्चिदानंदघन परमात्मा
समाहितः	SamaahitaH	balanced	सम्यक् प्रकारसे स्थित हैं (अर्थात् उसके ज्ञान में परमात्मा के सिवा अन्य कुछ है ही नही)	योग्य प्रकारे स्थित असतो
शीतोष्ण – सुख - दुःखेषु	SheetoShNa – Sukha – DuHkheShu	in cold and heat, pleasure and pain	सरदी गरमी और सुख दुःखादि में	शीत - उष्ण , सुख - दुःख इत्यादींमध्ये
तथा	Tathaa	as also	तथा	तसेच
मान - अपमानयोः	Maana – ApamaanayoH	in honour and dishonour	मान और अपमान में	मानात आणि अपमानात

अन्वय :- जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा शीतोष्ण - सुख - दुःखेषु तथा मान - अपमानयोः समाहितः (भवति) ॥ ६ - ७ ॥

English translation:-

The Supreme One, who is self-controlled and peaceful, is balanced / unperturbed in cold and heat, in pleasure and pain and in honour and dishonour.

हिन्दी अनुवाद :-

सरदी - गरमी और सुख - दुःखादि में तथा मान और अपमान में, जिस के अन्तःकरण की वृत्तियाँ भलीभाँति शान्त हैं, ऐसे समभाव आत्मावाले जितेन्द्रिय पुरुष के ज्ञान में सच्चिदानन्दघन परमात्मा सम्यक् प्रकार से स्थित हैं; अर्थात् उसके ज्ञान में परमात्मा के सिवा अन्य कुछ है ही नहीं ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याने आपले मन जिंकलेले असते आणि ज्याला पूर्ण शांती प्राप्त झालेली असते; त्याचा आत्मा शीत - उष्ण, सुख – दुःख आणि मान - अपमान यांच्या ठिकाणी समभावयुक्त असतो, म्हणजे समतोल राहतो.

विनोबांची गीताई :-

जितात्मा जो शांत झाला देखे ब्रह्म चि एकलें ।

मानापमानीं शीतोष्णीं सुख - दुःखीं समावलें ॥ ६ - ७ ॥

ज्ञान - विज्ञान - तृप्तात्मा कूटस्थः विजितेन्द्रियः।

युक्तः इति उच्यते योगी सम - लोष्ट - अश्म - काञ्चनः ॥ ६ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञान	Dnyaana	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
विज्ञान	Vidnyaana	wisdom (self realisation)	विज्ञान (से)	विज्ञान
तृप्तात्मा	Truptaatmaa	one who is satisfied	जिसका अन्तःकरण तृप्त है	ज्याचे अंतकरण तृप्त झाले आहे
कूटस्थः	KuuTasthaH	unshaken	जिसकी स्थिति विकाररहित है	ज्याची स्थिती विकाररहित आहे
विजितेन्द्रियः	VijitendriyaH	one who has conquered his senses	जिसकी इन्द्रियाँ भलीभाँति जीती हुई हैं	ज्याने चांगल्याप्रकारे इंद्रियांना जिंकलेले आहे
युक्तः	YuktaH	united / harmonised	युक्त अर्थात् जुडा हुआ - भगवत्प्राप्त (है)	युक्त (जोडलेला)
इति	Iti	Thus	ऐसे	असे
उच्यते	Uchyate	is said	कहा जाता है	म्हटले जाते
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
सम	Sama	same / equal	(जिसके लिये एक) समान है	(ज्याच्या दृष्टीने) हे समान आहेत
लोष्ट	LoShTa	a lump of earth	मिट्टी	मातीचे ढेकूळ
अश्म	Ashma	Stone	पत्थर	दगड
काञ्चनः	KaanchanaH	Gold	(और) सुवर्ण	सोने

अन्वय :-

ज्ञान - विज्ञान - तृप्तात्मा , कूटस्थः , विजितेन्द्रियः, सम - लोष्ट - अश्म - काञ्चनः योगी युक्तः इति उच्यते ॥ ६ - ८ ॥

English translation:-

That Yogi is regarded as steadfast who is satisfied with knowledge and wisdom, who remains unshaken / unperturbed, who has conquered his senses; to whom a lump of earth, a stone and a piece of gold are of equal value.

हिन्दी अनुवाद :-

ब्रह्मज्ञान और विवेक से परिपूर्ण जितेन्द्रिय और निर्विकार - समत्व बुद्धिवाला मनुष्य , जिसके लिए मिट्टी , पत्थर और स्वर्ण एक समान है ; वह परमात्मा से युक्त अर्थात् भगवत्प्राप्त योगी कहलाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याचा आत्मा ज्ञानाने व विज्ञानाने तृप्त झालेला असतो , ज्याने आपली इंद्रिये जिंकलेली असतात , जो कूटस्थ म्हणजे निर्विकार असतो आणि मातीचे ढेकूळ , दगड व सोने या सर्वांना सारखे मानू लागतो ; त्यालाच सिद्धयोगी असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

तोषला ज्ञान विज्ञानें स्थिर जिंकूनि इंद्रियें ।

तो योगी सम ज़ो देखे सोनें पाषाण मृत्तिका ॥ ६ - ८ ॥

सुहृद् - मित्र - अरि - उदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बन्धुषु ।

साधुषु अपि पापेषु समबुद्धिः विशिष्यते ॥ ६ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सुहृद्	Suhrud	good hearted	स्वार्थरहित सबका हित चाहनेवाला	स्वार्थ सोडून सर्वांचे हित करणारा
मित्र	Mitra	friend	मित्र	मित्र
अरि	Ari	foe	वैरी	वैरी
उदासीन	Udaaseena	indifferent	पक्षपातरहित	पक्षपातरहित
मध्यस्थ	MadhyasTha	neutral	दोनों ओर की भलाई चाहनेवाला	दोन्ही पक्षांचे कल्याण इच्छिणारा
द्वेष्य	DveShya	hateful	द्वेष्य	तिरस्कार करणारा
बन्धुषु	BandhuShu	in relatives	बन्धुगणों में	नातेवाईक इत्यादींच्या विषयी
साधुषु	SaadhuShu	in righteous ones	धर्मात्माओं में	धर्मात्म्यांच्या ठिकाणी
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
पापेषु	PaapeShu	in unrighteous ones	पापियों में भी	पापीजनांच्या बाबतीत
समबुद्धिः	Sama-BuddhiH	with equal intellect	समान भाव रखनेवाला (पुरुष)	समान भाव ठेवणारा (पुरुष)
विशिष्यते	VishiShyate	excels	अत्यन्त श्रेष्ठ है	अत्यंत श्रेष्ठ आहे

अन्वय :- (यः) सुहृद् - मित्र - अरि - उदासीन - मध्यस्थ - द्वेष्य - बन्धुषु , साधुषु , पापेषु अपि च समबुद्धिः विशिष्यते ॥ ६ - ९ ॥

English translation: -

He stands Supreme (excels) who has equal regard for friends, companions, enemies, neutrals, arbiters, hatefuls, relatives, saints and devils.

हिन्दी अनुवाद :-

स्वार्थ रहित सबका हित चाहनेवाला , मित्र , शत्रु , पक्षपात रहित , दोनों ओर की भलाई चाहनेवाला , द्वेष्य और बन्धुगणों में , धर्मात्माओं में और पापियों में भी समान भाव रखनेवाला ; अत्यन्त श्रेष्ठ है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो स्नेही (अहेतुक कल्याणेच्छू) , मित्र (सहेतुक प्रेमकर्ता) , शत्रू , निःपक्षपाती (उदासीन) , मध्यस्थ (दोन्ही विरुद्ध पक्षाचे हित इच्छिणारा) , द्वेष्य (अप्रिय असलेला) , नातलग , साधु (शास्त्रानुसार वर्तन करणारे) व पापी (शास्त्राविरुद्ध आचरण करणारे) यांच्याठायी समान भावना ठेवणारा असतो , तो श्रेष्ठ होय .

विनोबांची गीताई :-

शत्रु मित्र उदासीन मध्यस्थ परका सखा ।
असो साधु असो पापी सम पाहे विशेष तो ॥ ६ - ९ ॥

योगी युञ्जीत सततम् आत्मानम् रहसि स्थितः ।

एकाकी यतचित्तात्मा निराशीः अपरिग्रहः ॥ ६ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
योगी	Yogee	Yogi	योगी	ध्यानयोग्याने
युञ्जीत	Yunjeeta	let him keep the mind steady	परमात्मा में लगाए	परमात्यामध्ये लावावे / जोडावे
सततम्	Satatam	constantly	निरन्तर	निरन्तर
आत्मानम्	Aatmaanam	self	आत्मा को	आत्म्याला
रहसि	Rahasi	in solitude	एकान्त स्थान में	एकान्त स्थानी
स्थितः	SthitaH	remaining	स्थित होकर	स्थित होऊन
एकाकी	Ekaakee	alone	अकेला ही	एकटेच
यतचित्तात्मा	Yata-Chittaatmaa	the one having mind and body under total control	मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में रखनेवाला	मन व इंद्रिये यासहित शरीराला वश करून घेणाऱ्या
निराशीः	NiraashiiH	free from desires	आशारहित	आशारहित
अपरिग्रहः	AparigrahaH	free from greed	(और) संग्रहरहित	संग्रहरहित

अन्वय :- योगी रहसि स्थितः एकाकी, यतचित्तात्मा, निराशीः, अपरिग्रहः (च सन्) सततम् आत्मानम् युञ्जीत ॥ ६ - १० ॥

English translation: -

Let the Yogi try constantly to keep the mind steady, remaining in solitude, alone, with the mind and body controlled, free from hope and greed.

हिन्दी अनुवाद :-

मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में रखनेवाला, आशा रहित और संग्रह रहित योगी, अकेला ही एकान्त स्थान में स्थित होकर, आत्मा को निरन्तर परमात्मा में लगाए।

मराठी भाषान्तर :-

योग्याने एकांतात एकटे राहावे. शारीरिक इंद्रिये व मन यांचा संयम करावा. भोगवासना सोडावी. भोगवस्तूंचा संग्रह करू नये व सतत योगाभ्यासास लागावे म्हणजेच आत्मा व परमात्मा (परब्रह्म) यांना सतत जोडण्याचा प्रयत्न करावा.

विनोबांची गीताई :-

साधकें चित्त बांधूनि इच्छा संग्रह सोडुनी।
आत्म्यास नित्य जोडावें एकांतीं एकलेपणें ॥ ६ - १० ॥

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरम् आसनम् आत्मनः ।

न - अति - उच्छ्रितम् न - अति - नीचम् चैल - अजिन - कुश - उत्तरम् ॥ ६ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शुचौ	Shuchau	in a clean	शुद्ध	पवित्र
देशे	Deshe	spot / place	भूमि में	भूमीवर
प्रतिष्ठाप्य	PratiShThaapya	having established	स्थापन करके	स्थापन करून
स्थिरम्	Sthiram	firm	स्थिर	स्थिरपणे
आसनम्	Aasanam	seat	आसन को	आसन
आत्मनः	AatmanaH	his own	अपने	स्वतःचे
न	Na	not	(जो) नही	नाही
अति	Ati	very	बहुत	(जे) फार
उच्छ्रितम्	Uchchhritam	high	उँचा है	उंच
न	Na	not	(और) नही	नाही (असे)
अति	Ati	very	बहुत	(जे) फार
नीचम्	Neecham	low	नीचा (है ऐसे)	खाली / खोल
चैल	Chaila	cloth	वस्त्र	वस्त्र
अजिन	Ajina	deer skin	मृगछाला	मृगचर्म
कुश	Kusha	a kind of soft grass	कुशा	(दर्भ) मऊ गवत
उत्तरम्	Uttaram	one over the other	जिसके ऊपर क्रमशः बिछे हैं	क्रमाने पसरलेले

अन्वय :-

शुचौ देशे , न - अति - उच्छ्रितम् , न - अति - नीचम् , चैल - अजिन - कुश - उत्तरम् , आत्मनः स्थिरम् आसनम् प्रतिष्ठाप्य ॥ ६ - ११ ॥

English translation: -

Having established on a clean spot with a firm seat of his own, neither too high nor too low, having spread over it soft grass, a deer skin and a cloth, one over the other.

हिन्दी अनुवाद :-

शुद्ध भूमि में जिस के ऊपर क्रमशः कुशा , मृगछाला और वस्त्र बिछे हैं ; जो न बहुत उँचा है और न बहुत नीचा है , ऐसे अपने आसन को स्थिर स्थापन कर ...

मराठी भाषान्तर :-

पवित्र व शुद्ध , फार उंच नाही व फार खोल नाही अशा ठिकाणी , स्थिर आसन मांडावे . खाली दर्भ , त्यावर मृगाजीन व त्यावर मऊ धूतवस्त्र घालावे .

विनोबांची गीताई :-

पवित्र स्थान पाहूनि घालावें स्थिर आसन ।
दर्भ चर्म वरी वस्त्र न घ्यावें उंच नीच तें ॥ ६ - ११ ॥

तत्र एकाग्रम् मनः कृत्वा यत् चित्त इन्द्रियक्रियः ।

उपविश्य आसने युञ्ज्यात् योगम् आत्मविशुद्धये ॥ ६ - १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्र	Tatra	there	उस	त्या
एकाग्रम्	Ekaagram	focussed	एकाग्र	एकाग्र
मनः	ManaH	mind	मन को	मनाला
कृत्वा	Krutvaa	having made	करके	करून
यत्	Yat	with	वश में रखते हुए	वश करून
चित्त	Chitta	mind	चित्त	मन
इन्द्रिय - क्रियः	Indriya-KriyaH	functions of sensory organs of body	(और) इन्द्रियों की क्रियाओं को	इंद्रियांच्या क्रियांना
उपविश्य	Upavishya	having seated	बैठकर	बसून
आसने	Aasane	on seat	आसनपर	आसनावर
युञ्ज्यात्	Yunjyaat	let him practise	अभ्यास करे	अभ्यास करावा
योगम्	Yogam	Yoga	योगका	योगाचा
आत्मविशुद्धये	Aatma-Vishuddhaye	for self purification	अन्तःकरण की शुद्धि के लिये	अन्तःकरणाच्या शुद्धीसाठी

अन्वय :-

तत्र आसने उपविश्य मनः एकाग्रम् कृत्वा, यत् - चित्त - इन्द्रियक्रियः (सन्) आत्मविशुद्धये योगम् युञ्ज्यात् ॥ ६ - १२ ॥

English translation: -

There having made his mind well focussed, with the functions of mind and sensory organs under total control, seated on such a seat, let him practise Yoga for self purification.

हिन्दी अनुवाद :-

उस आसनपर बैठकर, चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में रखते हुए, मन को एकाग्र करके, अन्तःकरण की शुद्धि के लिये; योग का अभ्यास करे।

मराठी भाषान्तर :-

त्या आसनावर बसून, चित्त व इंद्रिये यांचे व्यापार नियमित करून, मन एकाग्र करून, चित्तशुद्धीसाठी योगाचा अभ्यास करावा.

विनोबांची गीताई :-

चित्तेंद्रियांचे व्यापार वारावे तेथ बैसुनी।
आत्म - शुध्द्यर्थ ज़ोडावा योग एकाग्र मानसें ॥ ६ - १२ ॥

समम् काय - शिरः - ग्रीवम् धारयन् अचलम् स्थिरः ।

सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रम् स्वम् दिशः च अनवलोकयन् ॥ ६ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
समम्	Samam	erect	समान	सरळ
काय	Kaaya	body	(अपना) शरीर	शरीर
शीरः	SheeraH	head	सिर	डोके
ग्रीवम्	Greevam	neck	(और) गले को	मान
धारयन्	Dhaarayan	holding	धारण कर	धारण करून
अचलम्	Achalam	still	अचल	निश्चल
स्थिरः	SthiraH	steady	स्थिर कर	स्थिर होऊन
सम्प्रेक्ष्य	Samprekshya	gazing at	दृष्टि जमाकर	दृष्टी ठेवून
नासिकाग्रम्	Naasikaa-Agram	tip of nose	नासिका के अग्रभागपर	नाकाच्या शेंड्यावर
स्वम्	Svam	one's own	अपनी	आपल्या
दिशः	DishaH	directions	(अन्य) दिशाओं को	दिशांकडे
च	Cha	and	और	आणि
अनवलोकयन्	Anavalokan	not looking	न देखता हुआ	न पाहता

अन्वय :-

स्थिरः (भूत्वा) काय – शीरः - ग्रीवम् अचलम् समम् धारयन् स्वम् नासिकाग्रम् सम्प्रेक्ष्य , च दिशः अनवलोकयन् ॥ ६ - १३ ॥

English translation:-

Holding body, head and neck erect, still and firm, gazing at the tip of his nose, let him focus without looking around.

हिन्दी अनुवाद :-

अपने शरीर गर्दन और सिर को अचल और सीधा रखकर , कहीं दूसरी ओर न देखते हुए , अपनी आँख और ध्यान को नासिका के अग्रभाग पर लक्षित करके ..

मराठी भाषान्तर :-

शरीर , डोके व मान सरळ रेषेत स्थिर ठेवून , स्वतःच्या नाकाच्या शेंड्यावर दृष्टी लावून , इकडे तिकडे न बघता , मन स्थिर करावे .

विनोबांची गीताई :-

शरीर सम - रेखेंत राखावें स्थिर निश्चळ ।

दृष्टि ठेवूनि नासाग्रीं न पहावें कुणीकडे ॥ ६ - १३ ॥

प्रशान्तात्मा विगतभीः ब्रह्मचारि व्रते स्थितः ।

मनः संयम्य मत् - चित्तः युक्तः आसीत मत् - परः ॥ ६ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रशान्तात्मा	Prashaant-Aatmaa	serene - minded	भलीभाँति शान्त अन्तःकरणवाला	चांगल्याप्रकारे अंतःकरण शांत असणाऱ्या
विगतभीः	VigatabheeH	fearless	भयरहित तथा	निर्भय
ब्रह्मचारि	Brahmachaari	celibate	ब्रह्मचारी के	ब्रह्मचाऱ्याच्या
व्रते	Vrate	in the vow of	व्रत में	व्रतामध्ये
स्थितः	SthitaH	firm	स्थित	स्थित
मनः	ManaH	mind	मन को	मनाचा
संयम्य	Sanyamya	having controlled	रोककर	संयम करून
मत् - चित्तः	Mat-ChittaH	thinking on Me	मुझ में चित्तवाला	माझ्याठिकाणी मन लावून
युक्तः	YuktaH	seeking union with the Self	सावधान योगी	सावधान ध्यानयोग्याने
आसीत	Aaseeta	let him sit	स्थित होवे	स्थित असावे
मत् - परः	Mat - ParaH	with Me as Supreme	मेरे परायण होकर	मत्परायण होऊन

अन्वय :-

प्रशान्तात्मा विगतभीः ब्रह्मचारिव्रते स्थितः, मनः संयम्य, मत् - चित्तः मत् - परः युक्तः आसीत ॥ ६ - १४ ॥

English translation:-

Serene-minded, fearless, firm in the vow of celibacy, having mind under control, thinking on Me, let him sit seeking union with Me as the Supreme.

हिन्दी अनुवाद :-

ब्रह्मचारी के व्रत में स्थित, भयरहित तथा भलीभाँति शान्त अन्तःकरणवाला सावधान योगी, मन को रोककर, मुझे ही अपना परम लक्ष्य मानकर, मुझमें ध्यान लगाए।

मराठी भाषान्तर :-

मन अत्यंत शांत व निर्भय ठेवून, ब्रह्मचर्य व्रताने राहून, मन संयमित करून, माझ्याठायी चित्त ठेवून, मत्परायण होऊन योगाभ्यासामध्ये एकाग्र राहावे.

विनोबांची गीताई :-

शांत निर्भय मत्चित्त ब्रह्मचर्य व्रतीं स्थिर।
मन रोधूनि युक्तीनें रहावें मत्परायण ॥ ६ - १४ ॥

युञ्जन् एवम् सदा आत्मानम् योगी नियतमानसः ।

शान्तिम् निर्वाणपरमाम् मत् - संस्थाम् अधिगच्छति ॥ ६ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
युञ्जन्	Yunjan	having equilibrium / balanced / steadfast	परमेश्वर के प्रति मन लगाता हुआ	परमेश्वराठायी मन लावून
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
सदा	Sadaa	always	निरन्तर (मुझ परमेश्वर के स्वरूप में)	निरंतर (मज परमेश्वराच्या स्वरूपामध्ये)
आत्मानम्	Aatmaanam	the self	आत्मा को	आत्म्याला
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
नियतमानसः	Niyata-MaanasaH	one with the controlled mind	वश में किये हुए मनवाला (ऐसा पुरुष)	ज्याने आपल्या मनावर ताबा मिळवला आहे (असा पुरुष)
शान्तिम्	Shaantim	peace	शान्ति को	शांती
निर्वाणपरमाम्	NirvaaNa-Paramaam	that culminates in supreme Bliss / Nirvana / Moksha	परमानन्द की पराकाष्ठारूप	परमानंदाची पराकाष्ठारूप
मत् - संस्थाम्	Mat - Sansthaam	abiding in Me	मुझ में रहनेवाली	माझ्यामध्ये असणारी
अधिगच्छति	Adhi-Gachchhati	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- एवम् सदा आत्मानम् युञ्जन् , नियतमानसः योगी निर्वाणपरमाम् मत् - संस्थाम् शान्तिम् अधिगच्छति ॥ ६ - १५ ॥

English translation:-

In this manner, keeping himself in an equilibrium state i.e. in union with the Self, the Yogi with subdued yet well focussed mind, attains the peace abiding in Me which ultimately culminates in Nirvana / Moksha / Supreme Bliss.

हिन्दी अनुवाद :-

इस तरह , सदा मन को परमात्मा में ध्यान लगाने का अभ्यास करते हुए , संयमित मनवाला योगी , परम निर्वाणरूपी शान्ति अर्थात् मुक्ति प्राप्त कर ; मुझ परमात्मा को ही प्राप्त करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे आपला योगाभ्यास सतत चालू ठेवणारा आणि आपल्या मनाचा सतत समतोल राखणारा असा योगाभ्यासी ; मोक्षप्रद अशी माझ्या ठायी असणारी परमशांती प्राप्त करतो .

विनोबांची गीताई :-

असें आत्म्यास जोडूनि योगी आवरिला मनें ।
मोक्षास भिडली शांति माझ्या ठाईं चि मेळवी ॥ ६ - १५ ॥

न - अति - अश्नतः तु योगः अस्ति न च एकान्तम् अनश्नतः ।

न च अति स्वप्नशीलस्य जाग्रतः न एव च अर्जुन ॥ ६ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	न / नही	(सिद्ध होत) नाही
अति	Ati	excess / too much	बहुत	पुष्कळ
अश्नतः	AshnataH	of one eating	खानेवाले को	खाणाऱ्याला
तु	Tu	verily / indeed	तो	खरोखर
योगः	YogaH	Yoga	(यह) योग	(हा) ध्यानयोग
अस्ति	Asti	is	प्राप्त होता है	प्राप्त होतो / असतो
न	Na	not	न	(सिद्ध होत) नाही
च	Cha	and	और	तसेच
एकान्तम्	Ekaantam	at all / entirely	बिलकुल	संपूर्णपणे (बिलकुल काहीही)
अनश्नतः	AnashnataH	of one not eating	न खानेवाले को	न खाणाऱ्यालाही
न	Na	not	न	(हा योग सिद्ध होत) नाही
च	Cha	and	और	आणि
अति	Ati	excess / too much	बहुत	अतिशय
स्वप्नशीलस्य	Svapna-Sheelasya	of one who sleeps	सदा शयन का स्वभाववाले को	झोपळूलाही
जाग्रतः	JaagrataH	of one who keeps awake	सदा जागनेवाले को	सदा जाग्रण करण्याला
न	Na	not	न	(सिद्ध होत) नाही
एव	Eva	even	ही	तसेच
च	Cha	and	और	आणि
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :-

हे अर्जुन ! अति - अश्नतः तु योगः न अस्ति, एकान्तम् अनश्नतः च न, अति स्वप्नशीलस्य च न ,जाग्रतः न एव च (अस्ति) ॥ ६ - १६ ॥

English translation: -

O Arjuna! Indeed Yoga is not for him who eats too much or does not eat at all, nor for him who sleeps too much or keeps awake.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु हे अर्जुन ! यह योग उस मनुष्य के लिए सम्भव नहीं होता, जो अधिक खानेवाला है, या बिल्कुल न खानेवाला है; तथा जो अधिक सोनेवाला है, या सदा जागनेवाला है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! खूप खाणाऱ्याला आणि मुळीच न खाणाऱ्याला, तसेच अति झोपाळूस किंवा अति जाग्रण करणाऱ्यास, हा योग साध्य होत नाही.

विनोबांची गीताई :-

न योग फार खाऊनि किंवा खाणें चि सोडुनी।
न फार झोंप किंवा जागत बैसुनी ॥ ६ - १६ ॥

युक्त आहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु ।

युक्त स्वप्न अव - बोधस्य योगः भवति दुःखहा ॥ ६ - १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
युक्त - आहार - विहारस्य	Yukta – Aahaara - Vihaarasya	of one who is moderate in eating and recreation	यथायोग्य आहार और विहार करनेवाले को	यथायोग्य आहार व विहार करणाऱ्याला
युक्त - चेष्टस्य - कर्मसु	Yukta - CheShTasya - Karmasu	of one who is moderate in behaviour and in actions	कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करनेवाले को	कर्मांमध्ये यथायोग्य व्यवहार करणाऱ्याला
युक्त – स्वप्न - अव - बोधस्य	Yukta - Svapna - Ava- Bodhasya	of one who is moderate in sleep and wakefulness	(और) यथायोग्य सोने तथा जागनेवाले को ही	(तसेच) यथायोग्य झोप व जाग्रण करणाऱ्याला
योगः	YogaH	Yoga	योग (तो)	(हा) योग
भवति	Bhavati	Becomes	प्राप्त होता है	प्राप्त होतो
दुःखहा	DuHkhahaa	destroyer of sorrow	दुःखों का नाश करनेवाला	दुःखाचा नाश करणारा

अन्वय :-

युक्त - आहार - विहारस्य कर्मसु युक्त - चेष्टस्य , युक्त - स्वप्न - अव - बोधस्य योगः दुःखहा भवति ॥ ६ - १७ ॥

English translation: -

One who is moderate in eating and recreation, temperate in his actions and who is regulated in sleep and wakefulness; for him Yoga becomes the destroyer of pain.

हिन्दी अनुवाद :-

सर्व दुःखों का नाश करने वाला यह योग तो , यथायोग्य नियमित आहार और विहार करनेवाले को , तथा कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करनेवाले को और यथायोग्य सोने तथा जागनेवाले को ही प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याचा आहार व विहार मोजका व योग्य आहे , ज्याचे कर्माचरण यथायोग्य आहे , ज्याची झोप व जागणे सीमित आहेत ; त्यालाच हा योग , संसारदुःखाचा नाश करणारा ठरतो .

विनोबांची गीताई :-

निज़णें ज़ागणें खाणें फिरणें आणि कार्य हि ।

मोज़ूनि करितो त्यास योग हा दुःख - नाशन ॥ ६ - १७ ॥

यदा विनियतम् चित्तम् आत्मनि एव अवतिष्ठते ।

निःस्पृहः सर्वकामेभ्यः युक्तः इति उच्यते तदा ॥ ६ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदा	Yadaa	when	जिस काल में	ज्यावेळी
विनियतम्	Viniyatam	perfectly controlled	अत्यन्त वश में किया हुआ	अत्यंत संयमित केलेले
चित्तम्	Chittam	mind	चित्त	मन
आत्मनि	Aatmani	in Self	परमात्मा में	आत्मस्वरुपात
एव	Eva	only	ही	च
अवतिष्ठते	AvatiShThate	rests	भलीभाँति स्थित हो जाता है	चांगल्याप्रकारे स्थित होते
निःस्पृहः	NiH-SpruhaH	free from longing desire	आसक्तिरहित पुरुष	इच्छा नसणारा पुरुष
सर्वकामेभ्यः	Sarva-KaamebhyaH	from all objects of desire	सम्पूर्ण भोगों से	संपूर्ण भोगांची
युक्तः	YuktaH	established in Yoga	योगयुक्त (है)	योग - युक्त (आहे)
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
उच्यते	Uchyate	is said	कहा जाता है	म्हटले जाते
तदा	Tadaa	then	उस कालमें	त्यावेळी

अन्वय :- यदा विनियतम् चित्तम् आत्मनि एव अवतिष्ठते , सर्वकामेभ्यः निःस्पृहः तदा युक्तः इति उच्यते ॥ ६ - १८ ॥

English translation:-

When a perfectly disciplined and perfectly controlled mind rests in the Self alone, freed from desire for all objects, then it is said to be established in Yoga.

हिन्दी अनुवाद :-

पूर्णरूप से वश में किया हुआ चित्त , जिस काल में , परमात्मा में ही भलीभाँति स्थित हो जाता है ; उस काल में , सम्पूर्ण भोगों से आसक्ति रहित पुरुष योगयुक्त है , ऐसा कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

जेव्हा चांगल्याप्रकारे स्वाधीन असलेले चित्त आत्मस्वरूपात स्थित होते आणि साधक कामनांपासून अलिप्त होतो ; तेव्हा त्या योगयुक्त पुरुषाला योगी म्हटले जाते .

विनोबांची गीताई :-

संपूण नेमिलें चित्त आत्म - रूपीं चि रंगला ।

निमली वासना तेंव्हां योगी तो युक्त बोलिला ॥ ६ - १८ ॥

यथा दीपः निवातस्थः न इङ्गते सा उपमा स्मृता ।

योगिनः यतचित्तस्य युञ्जतः योगम् आत्मनः ॥ ६ - १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यथा	Yathaa	as	जिस प्रकार	ज्याप्रमाणे
दीपः	DeepaH	Lamp	दीपक	दिवा
निवातस्थः	NivaatasthaH	placed in a windless place	वायुरहित स्थान में स्थित	वायुरहित स्थानी असणारा
न	Na	not	नहीं	नाही
इङ्गते	Ingate	flicker	चलायमान होता है	फडफडत
सा	Saa	that	वैसी (ही)	ती (च)
उपमा	Upamaa	simile / parallel example	उपमा	उपमा
स्मृता	Smrutaa	is thought	कही गयी है	सांगितली गेली आहे
योगिनः	YoginaH	of the Yogi	योगी के	योगाच्या
यतचित्तस्य	Yata-Chittasya	of one with controlled mind	जीते हुए चित्त की	जिंकलेल्या मनाला
युञ्जतः	YunjataH	practising	लगे हुए	जोडलेल्या
योगम्	Yogam	union	ध्यान में	ध्यानात
आत्मनः	AatmanaH	of the Self	परमात्मा के	परमात्म्याच्या

अन्वय :- यथा निवातस्थः दीपः न इङ्गते , सा उपमा , आत्मनः योगम् युञ्जतः यतचित्तस्य योगिनः स्मृता ॥ ६ - १९ ॥

English translation:-

As a lamp does not flicker in a windless spot – that parallel example / simile is often used to describe the disciplined mind of a Yogi practising union with the Self.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस तरह , वायुरहित स्थान में स्थित , दीपक चलायमान नहीं होता ; वैसी ही उपमा , परमात्मा के ध्यान में लगे हुए योगी के वश में किये हुए चित्त की कही गयी है ।

मराठी भाषान्तर :-

वायुरहित जागी ठेवलेल्या दिव्याची ज्योत जशी हालत नाही व निश्चल तेवत राहते ; तीच उपमा परमात्म्याच्या ध्यानामध्ये मग्न असलेल्या योग्याच्या संयमित चित्ताला दिली आहे .

विनोबांची गीताई :-

निर्वातीं ठेविला दीप तेवतो एकसारखा ।

तसें आत्मानुसंधानीं योग्याचें चित्त वर्णिती ॥ ६ - १९ ॥

यत्र उपरमते चित्तम् निरुद्धम् योगसेवया ।

यत्र च एव आत्मना आत्मानम् पश्यन् आत्मनि तुष्यति ॥ ६ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्र	Yatra	Where / when	जिस अवस्था में	ज्या अवस्थेमध्ये
उपरमते	Uparamate	attains quietude	उपराम हो जाता है	रममाण होते
चित्तम्	Chittam	mind	चित्त	मन
निरुद्धम्	Niruddham	restrained	निरुद्ध / शांत	शांत (झालेले)
योगसेवया	Yogasevayaa	by the practice of Yoga	योग के अभ्यास से	योगाच्या अभ्यासाने
यत्र	Yatra	where / when	जिस अवस्था में	ज्या अवस्थेमध्ये
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	only	ही	केवळ
आत्मना	Aatmanaa	by Self	परमात्मा के ध्यान से शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धिद्वारा	परमात्म्याच्या ध्यानाने (शुद्ध झालेल्या सूक्ष्मबुद्धीच्या द्वारे)
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	परमात्मा को	परमात्म्याचा
पश्यन्	Pashyan	seeing	साक्षात् करता हुआ	साक्षात्कार करुन घेत
आत्मनि	Aatmani	in Self	(सच्चिदानन्दघन) परमात्मा में	(सच्चिदानंदघन) परमात्म्यामध्येच
तुष्यति	TuShyati	is satisfied	संतुष्ट रहता है	संतुष्ट होऊन राहते

अन्वय :- योगसेवया निरुद्धम् चित्तम् यत्र उपरमते, च एव यत्र आत्मना आत्मानम् पश्यन् आत्मनि तुष्यति ॥ ६ - २० ॥

English translation:-

When the mind, restrained by the practice of Yoga, comes to rest (quietude) and when beholding the Self alone by the Self, it is satisfied in the Self.

हिन्दी अनुवाद :-

जब ध्यानयोग के अभ्यास से चित्त शान्त हो जाता है, तब साधक ध्यान से शुद्ध हुए मन और बुद्धि द्वारा, परमात्मा को साक्षात कर, आत्मा में ही संतुष्ट होता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्या ठायी योगाभ्यासाने नियमन केलेले योग्याचे मन रमते व शांत होते; त्या ठायी तो शुद्ध मनाने परमात्म्यास पाहून आत्म्यातच संतुष्ट होतो.

विनोबांची गीताई :-

निरोधें ज़ेथ चित्ताचा सर्व संचार संपला।

ज़ेथ भेटूनि आत्म्यातें अंतरी तोषला स्वयें ॥ ६ - २० ॥

सुखम् आत्यन्तिकम् यत् तत् बुद्धिग्राह्यम् अति - इन्द्रियम् ।

वेत्ति यत्र न च एव अयम् स्थितः चलति तत्त्वतः ॥ ६ - २१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सुखम्	Sukham	bliss	आनन्द (है)	आनंद (आहे)
आत्यन्तिकम्	Aatyantikam	infinite	अनन्त	अनन्त
यत्	Yat	when / which	जो	जो
तत्	Tat	that	उस को	त्याचा
बुद्धिग्राह्यम्	Buddhi-Graahyam	can be grasped by intellect	(केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म) बुद्धिद्वारा ग्रहण करने योग्य	(फक्त शुद्ध झालेल्या सूक्ष्म) बुद्धीच्या द्वारे ग्रहण करण्यास योग्य
अति - इन्द्रियम्	Ati-Indriyam	transcending the senses	इन्द्रियों से अतीत	इंद्रियातीत
वेत्ति	Vitti	knows	अनुभव करता है	अनुभव येतो
यत्र	Yatra	where	उस (अवस्था में)	ज्या (अवस्थेमध्ये)
न	Na	not	नहीं	नाही
च	Cha	and	और	आणि (ज्या अवस्थेत)
एव	Eva	even	ही	केवळ
अयम्	Ayam	this	यह (योगी)	हा (योगी)
स्थितः	SthitaH	established	स्थित	स्थिर झालेला
चलति	Chalati	moves	विचलित होता	विचलित होतो
तत्त्वतः	TattvataH	from the Reality	परमात्मा के स्वरूप से	तत्त्वापासून

अन्वय :- यत्र यत् बुद्धिग्राह्यम् , अति - इन्द्रियम् , आत्यन्तिकम् सुखम् तत् वेत्ति , (यत्र) च स्थितः अयम् तत्त्वतः न एव चलति ॥ ६ - २१ ॥

English translation:-

When he knows the Supreme bliss, which can be grasped by the pure intellect, which transcends the senses and wherein once established he never moves away from the Reality.

हिन्दी अनुवाद :-

इन्द्रियों से अतीत , केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धिद्वारा , ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है , उस को जिस अवस्था में अनुभव करता है ; और उस अवस्था में स्थित , यह योगी परमात्मा के स्वरूप से , कभी भी विचलित नहीं होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

जेथे इंद्रियांना अगोचर म्हणजे न दिसणारे पण बुद्धिगम्य असे आत्यंतिक सुख तो योगी अनुभवतो आणि तेथे तो एकदा स्थिरावला म्हणजे त्या तत्त्वापासून (आत्मस्वरूपापासून) तो कधीही ढळत नाही .

विनोबांची गीताई :-

भोगूनि इंद्रियातीत बुद्धि - गम्य महा - सुख ।
न ढळे चि कधीं ज़ेथ तत्त्वापासूनि लेश हि ॥ ६ - २१ ॥

यम् लब्ध्वा च अपरम् लाभम् मन्यते न अधिकम् ततः ।

यस्मिन् स्थितः न दुःखेन गुरुणा अपि विचाल्यते ॥ ६ - २२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यम्	Yam	which	जिस	जो
लब्ध्वा	Labdhvaa	having obtained	प्राप्त होकर	प्राप्त झाल्यावर
च	Cha	and	और (परमात्म – प्राप्तिरूप)	आणि (परमात्म - प्राप्तिरुप)
अपरम्	Aparam	other	दूसरा (कुछ भी लाभ)	दुसरा (कोणताही लाभ)
लाभम्	Laabham	gain	लाभ को	लाभ
मन्यते	Manyate	thinks	मानता	(तो योगी) मानतो
न	Na	not	नहीं	नाही
अधिकम्	Adhikam	greater	अधिक	अधिक
ततः	TataH	than that	उस से	त्याच्यापेक्षा
यस्मिन्	Yasmin	in which	उस अवस्था में	ज्या अवस्थेमध्ये
स्थितः	SthitaH	established	स्थित योगी	स्थित असणारा योगी
न	Na	not	नहीं	नाही
दुःखेन	DuHkhena	by sorrow	दुःख से	दुःखाने
गुरुणा	GuruNaa	(by) heavy	बड़े भारी	फार मोठ्या
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
विचाल्यते	Vichaalyate	is moved	विचलित होता है	विचलित होतो

अन्वय :-

यम् च लब्ध्वा , ततः अधिकम् अपरम् लाभम् न मन्यते , यस्मिन् स्थितः गुरुणा अपि दुःखेन न विचाल्यते ॥ ६ - २२ ॥

English translation: -

And having obtained which, he thinks that no other gain is superior to it, wherein established he is not moved even by great sorrow.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस लाभ को प्राप्त होकर , उस से अधिक दूसरा कुछ भी लाभ नहीं मानता और परमात्मप्राप्तिरूप उस अवस्था में स्थित हुआ योगी , बड़े भारी दुःख से भी , विचलित नहीं होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ते आत्मस्वरूप प्राप्त झाले असता , दुसरा कोणताही लाभ त्यास अधिक श्रेष्ठ वाटत नाही आणि त्या स्थितीमध्ये स्थिर असता ; कोणतेही मोठे दुःख त्याला चाळवू शकत नाही .

विनोबांची गीताई :-

ज़या लाभापुढें लाभ दुसरा तुच्छ लेखितो ।

न चळें ज़ेथ राहूनि दुःख भारें हि दाटला ॥ ६ - २२ ॥

तम् विद्यात् दुःख संयोग वियोगम् योग सञ्ज्ञितम् ।

सः निश्चयेन योक्तव्यः योगः अनिर्विण्णचेतसा ॥ ६ - २३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तम्	Tam	that	उस को	त्याला (योगाला)
विद्यात्	Vidyaat	let (him) know	जानना चाहिये	जाणले पाहिजे
दुःख	DuHkha	pain / sorrow	(और जो) दुःखरूप संसार के	दुःख
संयोग	Sanyoga	union	संयोग से	संयोग
वियोगम्	Viyogam	severance	रहित है	वियोग (जन्म मरणरूप संसारातून कायम मुक्त करणारा आहे)
योग	Yoga	Yoga	योग (है)	(ज्याला) योग (हे)
सञ्ज्ञितम्	Sandnyitam	by the name of	तथा जिसका नाम	नाव आहे
सः	SaH	that	वह	तो
निश्चयेन	Nishchayena	with determination	निश्चयपूर्वक करना	निश्चयाने
योक्तव्यः	YoktavyaH	should be practiced	कर्तव्य है	(हे) कर्तव्य होय
योगः	YogaH	Yoga	योग	योग
अनिर्विण्णचेतसा	AnirviNNa-Chetasaa	With undesponding / undespairing mind	न उकताये हुए (अर्थात् धैर्य और उत्साहयुक्त चित्त से)	उबग न आलेल्या मनाने (धैर्य व उत्साह यांनी युक्त अशा मनाने)

अन्वय :-

तम् दुःख - संयोग - वियोगम् , योग - सञ्ज्ञितम् विद्यात्, सः योगः अनिर्विण्णचेतसा निश्चयेन योक्तव्यः ॥ ६ - २३ ॥

English translation:-

Let that discontinuity from the union with pain / sorrow to be known as Yoga. Let that Yoga to be practiced with determination (with intellect) and with an undistracted mind.

हिन्दी अनुवाद :-

और जो दुःखरूप संसार के संयोग और वियोग से रहित है, तथा जिसका नाम योग है, उस को जानना चाहिये। वह योग, न उकताये हुए, अर्थात् धैर्य और उत्साहयुक्त चित्त से, निश्चयपूर्वक करना कर्तव्य है।

मराठी भाषान्तर :-

त्या दुःखस्वरूप संसाराच्या संयोगापासून झालेल्या वियोगाला योग असे जाणावे. साधकाने तो योगाभ्यास प्रसन्नचित्ताने आणि निश्चयाने करणे योग्य आहे.

विनोबांची गीताई :-

तयास म्हणती योग दुःखाचा जो वियोग चि।
जोडावा निश्चयानें तो योग उत्साह राखुनी ॥ ६ - २३ ॥

संकल्पप्रभवान् कामान् त्यक्-त्वा सर्वान् अशेषतः ।

मनसा एव इन्द्रियग्रामम् विनियम्य समन्ततः ॥ ६ - २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
संकल्पप्रभवान्	Sankalpa-Prabhavaan	born of thoughts / imagination	संकल्प से उत्पन्न होने वाली	विषयविचारातून उत्पन्न होणाऱ्या
कामान्	kaamaan	desires	कामनाओं को	अभिलाषांचा
त्यक्-त्वा	Tyaktvaa	having abandoned	त्यागकर और	त्याग करून
सर्वान्	Sarvaan	all	सम्पूर्ण	सर्व
अशेषतः	AsheShataH	without reserve	निःशेषरूप से	समूळ
मनसा	Manasaa	by the mind	मन के द्वारा	मनानेच
एव	Eva	even	तथा	च
इन्द्रियग्रामम्	Indriya-Graamam	group of senses	इन्द्रियों के समुदाय को	सर्व इंद्रियांना
विनियम्य	Viniyamya	having completely restrained	भलीभाँति रोककर	चांगल्याप्रकारे संयमित करून
समन्ततः	SamantataH	from all sides / quarters	सभी ओरसे	सर्व बाजूंनी

अन्वय :-

संकल्पप्रभवान् सर्वान् कामान् अशेषतः त्यक्-त्वा , मनसा एव इन्द्रियग्रामम् समन्ततः विनियम्य ॥ ६ - २४ ॥

English translation:-

Abandoning without reserve all desires born out of imagination and completely restraining the group of senses from all sides by the mind...

हिन्दी अनुवाद :-

सम्पूर्ण सकाम कर्मों का परित्याग कर बुद्धि द्वारा सभी इन्द्रियों को अच्छी तरह वश में किये हुए अन्य किसी भी विषय का चिन्तन न करता हुआ ...

मराठी भाषान्तर :-

संकल्पापासून म्हणजे विषय चिंतनातून उत्पन्न होणाऱ्या सर्व वासनांचा संपूर्णपणे त्याग करून , मनानेच इंद्रियसमूहाचा उत्तमप्रकारे सर्व बाजूंनी निग्रह करावा .

विनोबांची गीताई :-

संकल्पीं उठिले सारे काम निःशेष सोडुनी ।
इंद्रियें हीं मनानें चि ओढूनि विषयांतुनी ॥ ६ - २४ ॥

शनैः शनैः उपरमेत् बुद्धया धृतिगृहीतया ।

आत्मसंस्थम् मनः कृत्वा न किंचित् अपि चिन्तयेत् ॥ ६ - २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शनैः	ShanaiH	gradually	क्रम	हळू
शनैः	ShanaiH	gradually	क्रम से (अभ्यास करता हुआ)	हळू (अभ्यास करत असताना) / यथावकाश
उपरमेत्	Uparamet	let him attain quietude	उपरति को प्राप्त होकर	उपरती (शांती) प्राप्त करून घ्यावी (तसेच)
बुद्धया	Buddhyaa	by the intellect	बुद्धि के द्वारा	बुद्धीने
धृतिगृहीतया	Dhruti-Gruheetayaa	held in firmness	(तथा) धैर्ययुक्त	धैर्ययुक्त
आत्मसंस्थम्	Aatma-Sanstham	placed in the Self	परमात्मा में स्थित कर	परमात्म्यामध्ये स्थित / आत्मस्वरूपामध्ये
मनः	ManaH	the mind	मन को	मनाला
कृत्वा	Krutvaa	having made	कर	करून
न	Na	not	न	नाही
किंचित्	Kinchit	anything	(परमात्मा के सिवा और) कुछ	(परमात्म्याशिवाय अन्य) कशाचा
अपि	Api	even	भी	ही
चिन्तयेत्	Chintayet	let him think	चिन्तन करे	चिन्तन करावे

अन्वय :-

धृतिगृहीतया बुद्धया शनैः शनैः उपरमेत्, मनः आत्मसंस्थम् कृत्वा, किंचित् अपि न चिन्तयेत् ॥ ६ - २५ ॥

English translation:-

Step by step let him attain quietude with his intellect set in firmness; with the mind fixed on the Self, let him not think of anything else.

हिन्दी अनुवाद :-

धीरे धीरे (क्रम क्रम से) अभ्यास करता हुआ, शांति को प्राप्त होकर तथा धैर्ययुक्त बुद्धि के द्वारा, मन को परमात्मा में स्थित कर; परमात्मा के सिवा अन्य कुछ भी चिन्तन न करे।

मराठी भाषान्तर :-

धैर्ययुक्त बुद्धीने हळूहळू मनाला विषयांपासून शांत करावे, मनाला आत्मस्वरूपामध्ये स्थिर करून; दुसऱ्या कशाचेही चिंतन करू नये.

विनोबांची गीताई :-

धरूनि धीर बुद्धीनें निवर्तावें हळूं हळूं।
आत्म्यांत मन रोवूनि कांहीं चिंतूं नये स्वयें ॥ ६ - २५ ॥

यतः यतः निश्चरति मनः चञ्चलम् अस्थिरम् ।

ततः ततः नियम्य एतत् आत्मनि एव वशम् नयेत् ॥ ६ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यतः - यतः	YataH - YataH	from whatever cause	जिस जिस (शब्दादि विषय के निमित्त से संसार में)	ज्या ज्या पासून (शब्दादी विषयांच्या निमित्ताने संसारात)
निश्चरति	Nishcharati	wanders away	विचरता है	भरकटत असते
मनः	ManaH	mind	मन	मन
चञ्चलम्	Chanchalam	restless	(और) चञ्चल	चंचल असणारे
अस्थिरम्	Asthiram	unsteady	स्थिर न रहनेवाला	(आणि) स्थिर न राहणारे
ततः - ततः	TataH - TataH	from that	उस उस विषय से	त्या त्या (विषया पासून)
नियम्य	Niyamya	having restrained	रोककर (यानी हटाकर इसे बार बार)	रोखून (म्हणजे निग्रहाने आवरून)
एतत्	Etat	this	यह	हे
आत्मनि	Aatmani	in the Self	परमात्मा में	(परमात्म) स्वरूपामध्ये
एव	Eva	alone	ही	च
वशम्	Vasham	(under) control	निरूद्ध	स्थिर
नयेत्	Nayet	let him bring	करे	करावे

अन्वय :- चञ्चलम् अस्थिरम् मनः यतः यतः निश्चरति , ततः ततः एतत् नियम्य , आत्मनि एव वशम् नयेत् ॥ ६ - २६ ॥

English translation:-

By whatever cause the wavering and restless mind wanders away, let him curb those distracting tendencies from that ultimate goal of self-realisation and subjugate it solely to the Self.

हिन्दी अनुवाद :-

यह स्थिर न रहनेवाला और चञ्चल मन , जिस - जिस शब्दादि विषय के निमित्त से , संसार में विचरता है ; उस - उस विषय से हटाकर इसे बार बार , परमात्मा में ही निरूद्ध करे ।

मराठी भाषान्तर :-

हे चंचल व अस्थिर मन ज्या ज्या विषयांमागे धावू लागेल त्या त्या विषयांपासून त्याला निग्रहाने आवरून ते आत्म्याच्या स्वरूपामध्ये स्थिर करावे .

विनोबांची गीताई :-

फुटेल ज़ेथ ज़ेथूनि मन चंचळ अस्थिर ।
तेथ तेथूनि बांधूनि लावावें आत्म चिंतनीं ॥ ६ - २६ ॥

प्रशान्तमनसम् हि एनम् योगिनम् सुखम् उत्तमम् ।

उप - एति शान्त - रजसम् ब्रह्मभूतम् अकल्मषम् ॥ ६ - २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रशान्तमनसम्	Prashaanta-Manasam	one of perfectly tranquil mind	जिसका मन भली प्रकार शान्त है	ज्याचे मन चांगल्याप्रकारे शांत झाले आहे (असा)
हि	Hi	verily	क्योंकि	कारण
एनम्	Enam	this	इस	या
योगिनम्	Yoginam	to Yogi	योगी को	योग्याला
सुखम्	Sukham	Bliss	आनन्द	आनंद
उत्तमम्	Uttamam	supreme	उत्तम	उत्तम
उप - एति	Upa-Eti	Comes	प्राप्त होता है	प्राप्त होतो
शान्त - रजसम्	Shaanta - Rajasam	one whose passion is calmed	(और) जिसका रजोगुण शान्त हो गया है ऐसे	(आणि) ज्याचा रजोगुण शांत होऊन गेलेला आहे
ब्रह्मभूतम्	Brahma-Bhuutam	become Brahman	सच्चिदानन्दघन ब्रह्म के साथ एकी भाव हुए	(अशा सच्चिदानंदघन) ब्रह्माशी एकीभाव प्राप्त झालेल्या
अकल्मषम्	AkalmaSham	sinless / free from sin	जो पाप से रहित है	पापरहित

अन्वय :- प्रशान्तमनसम् शान्त - रजसम् अकल्मषम् ब्रह्मभूतम् एनम् योगिनम् उत्तमम् सुखम् उप - एति हि ॥ ६ - २७ ॥

English translation:-

Supreme Bliss verily comes to that Yogi whose mind is calm, whose passions are pacified, who has become one with Brahman and who is sinless.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसका मन शान्त है और जिसकी काम, क्रोध और लोभ इत्यादि रजोगुणी प्रवृत्तियाँ नष्ट हो गयी हैं; ऐसे पापरहित ब्रह्मस्वरूप योगी को, परम आनन्द प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याचे मन अतिशय शांत, रजोगुण विरहित व निष्पाप झालेले आहे; अशा त्या ब्रह्मरूप योग्याला उत्तम सुख प्राप्त होते.

विनोबांची गीताई :-

विकारांसह तें ज्याचें शमलें मन निर्मळ।

झाला ब्रह्म चि तो योगी पावला सुख उत्तम ॥ ६ - २७ ॥

युञ्जन् एवम् सदा आत्मानम् योगी विगतकल्मषः ।

सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शम् अत्यन्तम् सुखम् अश्नुते ॥ ६ - २८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
युञ्जन्	Yunjan	practising the union with the Self	लगाता हुआ	जोडीत / युक्त होत
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
सदा	Sadaa	always	निरन्तर	निरंतर
आत्मानम्	Aatmaanam	the self	आत्मा को (परमात्मा में)	आत्म्याला (परमात्म्यामध्ये)
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी (हा)
विगतकल्मषः	Vigata-KalmaShaH	freed from sin	पापरहित	पापरहित
सुखेन	Sukhena	easily	सुखपूर्वक	सुखाने
ब्रह्मसंस्पर्शम्	Brahma-Samsparsham	caused by contact with Brahman	परमात्मा की प्राप्तिरूप	परब्रह्म परमात्म्याची प्राप्ती हे स्वरूप असणारा
अत्यन्तम्	Atyantam	infinite	अनन्त	अनंत / आत्यंतिक
सुखम्	Sukham	bliss	आनन्द का	आनंद
अश्नुते	Ashnute	attains / enjoys	अनुभव करता है	अनुभवतो

अन्वय :- एवम् सदा आत्मानम् युञ्जन् योगी विगतकल्मषः ब्रह्मसंस्पर्शम् अत्यन्तम् सुखम् सुखेन अश्नुते ॥ ६ - २८ ॥

English translation:-

Thus constantly practising the union with the Self, the Yogi with pacified mind, freed from sin, easily attains the infinite supreme bliss of contact with the Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

पापरहित योगी , इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ , सुखपूर्वक परब्रह्म परमात्माकी प्राप्तिरूप अनन्त आनन्दका अनुभव सहजता से करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे सतत चित्त एकाग्र करणारा , निष्पाप , निर्विघ्नपणे योगाभ्यास करणारा साधक ब्रह्मस्वरूप निरतिशय सुख सहजपणे अनुभवतो .

विनोबांची गीताई :-

आत्म्यास नित्य ज़ोडूनि ह्यापरी दोष ज़ाळुनी ।
सुखें चि भोगितो योगी ब्रह्मानंद अपार तो ॥ ६ - २८ ॥

सर्वभूतस्थम् आत्मानम् सर्वभूतानि च आत्मनि ।

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ ६ - २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वभूतस्थम्	Sarva-Bhuutastham	abiding in all beings	सम्पूर्ण भूतों में स्थित	सर्व भूतमात्रांमध्ये स्थित
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	आत्मा को	स्व-आत्म्याला
सर्वभूतानि	Sarva-Bhuutaani	all beings	सम्पूर्ण भूतों को	सर्व भूतमात्रांना
च	Cha	and	और	आणि
आत्मनि	Aatmani	in the Self	आत्मा में	स्व-आत्म्यांत
ईक्षते	Iikshate	sees	(कल्पित) देखता है	(स्थित) पाहतो
योगयुक्तात्मा	Yoga-Yuktaatmaa	one who is harmonised by Yoga	(सर्वव्यापी अनन्त चेतन में एकीभाव से) स्थितिरूप योगसे युक्त आत्मावाला (तथा)	ज्याचे अन्तःकरण योगाने युक्त म्हणजेच स्थिर झालेले आहे
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सब में	सर्व ठिकाणी
समदर्शनः	Sama-DarshanaH	one who sees the same	समभाव से देखनेवाला योगी	समभावाने पाहणारा योगी

अन्वय :- योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः , आत्मानम् सर्वभूतस्थम् सर्वभूतानि च आत्मनि ईक्षते ॥ ६ - २९ ॥

English translation:-

United to the Self by the Yoga, he sees the Self in all the beings and all beings in the Self, he sees the same in all, everywhere.

हिन्दी अनुवाद :-

योगयुक्त मनुष्य सब में सर्वव्यापी परमात्मा को तथा परमात्मा में सब को देखने के कारण समस्त प्राणियों को एकभाव से देखता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याचे मन योगयुक्त आहे आणि जो सर्व प्राणिमात्रांकडे समदृष्टीने पाहतो , तो सर्व प्राणिमात्रांच्या ठायी आपण व आपल्याठायी सर्व प्राणिमात्र आहेत असे पाहतो .

विनोबांची गीताई :-

भूतांत भरला आत्मा भूतें आत्म्यांत राहिलीं।
योगानें ज़ोडिला देखे हें चि सर्वत्र दर्शन ॥ ६ - २९ ॥

यः माम् पश्यति सर्वत्र सर्वम् च मयि पश्यति ।

तस्य अहम् न प्रणश्यामि सः च मे न प्रणश्यति ॥ ६ - ३० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	who	जो (मनुष्य)	जो (पुरुष)
माम्	Maam	to Me	सब के आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक	मला
पश्यति	Pashyati	sees	देखता है	पाहतो
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सम्पूर्ण भूतों में	सर्व ठिकाणी
सर्वम्	Sarvam	all	सम्पूर्ण भूतों को	सर्व भूतांना
च	Cha	and	और	आणि
मयि	Mayi	In Me	मुझ वासुदेव के अन्तर्गत	मज वासुदेवामध्ये
पश्यति	Pashyati	sees	देखता है	पाहतो
तस्य	Tasya	Of him	उसके लिये	त्याच्या (बाबतीत)
अहम्	Aham	I	मैं	मी
न	Na	not	नहीं	नाही
प्रणश्यामि	PraNashyaami	vanish / perish	अदृश्य होता हूँ	अदृश्य होतो
सः	SaH	he	वह	तो
च	Cha	and	और	तसेच
मे	Me	of Me	मेरे लिये	माझ्यासाठी
न	Na	not	नहीं	नाही
प्रणश्यति	PraNashyati	vanishes / perishes	अदृश्य होता है	अदृश्य होतो

अन्वय :-

यः माम् सर्वत्र पश्यति, सर्वम् च मयि पश्यति, तस्य अहम् न प्रणश्यामि , सः च मे न प्रणश्यति ॥ ६ - ३० ॥

English translation:-

He who sees Me everywhere and sees everything in Me, I never get separated from him nor he gets separated from Me.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य, सब जगह तथा सब चर और अचर में , मुझ सर्वव्यापी परब्रह्म - परमात्मा अर्थात् श्रीकृष्ण को ही देखता है; और सब को, मुझ में अर्थात् श्रीकृष्ण में ही देखता है, मैं उससे अलग नहीं रहता हूँ तथा वह भी मुझसे दूर नहीं होता है।

मराठी भाषान्तर :-

जो मला सर्व प्राणिमात्रांमध्ये पाहतो व सर्व प्राणिमात्रांना माझ्यामधे पाहतो; मी कधीही त्याच्यापासून अलग होत नाही व तो माझ्यापासून कधीही दूर होत नाही.

विनोबांची गीताई :-

मज सर्वांत तो पाहे पाहे माझ्यांत सर्व हि।

त्याचा मी आणि तो माझा एकमेकांस अक्षय ॥ ६ - ३० ॥

सर्वभूतस्थितम् यः माम् भजति एकत्वम् आस्थितः ।

सर्वथा वर्तमानः अपि सः योगी मयि वर्तते ॥ ६ - ३१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्व-भूतस्थितम्	Sarva-Bhuuta-sthitam	abiding in all beings	सम्पूर्ण भूतों में आत्मरूप से स्थित	सर्व प्राणिमात्रांत
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो पुरुष
माम्	Maam	to Me	मुझ सच्चिदानन्दघन वासुदेव को	मला (सच्चिदानंदघन वासुदेवाला)
भजति	Bhajati	worships	भजता है	भजतो
एकत्वम्	Ekatvam	in oneness	एकीभाव में	अद्वैत स्वरूपात
आस्थितः	AasthitaH	established	स्थित होकर	स्थित होऊन
सर्वथा	Sarvathaa	in every way	सब प्रकार से	सर्व प्रकारांनी
वर्तमानः	VartamaanaH	existing	बरतता हुआ	व्यवहार करीत असताना
अपि	Api	also / even	भी	सुद्धा
सः	SaH	he	वह	तो
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
मयि	Mayi	in Me	मुझ में ही	माझ्यामध्येच
वर्तते	Vartate	abides	बरतता है	व्यवहार करतो

अन्वय :-

यः एकत्वम् आस्थितः सर्वभूतस्थितम् माम् भजति, सः योगी सर्वथा वर्तमानः अपि मयि वर्तते ॥ ६ - ३१ ॥

English translation:-

He, who is established in unity (Yoga), worships Me abiding in all beings, that Yogi lives in Me, whatever may be his mode of living.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य, अद्वैतभाव से सम्पूर्ण भूतों में मुझ परमात्मा को ही स्थित समझकर, मेरी उपासना करता है; वैसा योगी, किसी भी हालत में, क्यों न रहे, मुझ में ही स्थित रहता है।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व प्राणिमात्रांच्या ठायी असणारा आत्मा आणि परमात्मा यांचे अद्वैत आहे या एकाच विचारात स्थिर झालेला योगी, सर्व प्राणिमात्रांत राहणाऱ्या मला - ईश्वराला भजतो. तो योगी सर्व व्यवहार करीत असला तरी माझ्याच ठायी राहतो.

विनोबांची गीताई :-

स्थिर होऊनि एकत्वीं सर्व भूतीं भजे मज।
राहो कसा हि योगी माझ्यामध्यें चि राहतो ॥ ६ - ३१ ॥

आत्मौपम्येन सर्वत्र समम् पश्यति यः अर्जुन ।

सुखम् वा यदि वा दुःखम् सः योगी परमः मतः ॥ ६ - ३२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
आत्म - औपम्येन	Aatma - Aupamyena	the Self - through the likeness of	अपनी भाँति	आपल्या उपमेने म्हणजेच आत्मस्वरूपाने
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सम्पूर्ण भूतों में	सर्व ठिकाणी (सर्व प्राणिमात्रांमध्ये)
समम्	Samam	equality	समत्वभाव को	समान दृष्टीने
पश्यति	Pashyati	sees	देखता है	पाहतो
यः	YaH	He who	जो योगी	जो योगी
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सुखम्	Sukham	pleasure	(और) सुख	(सर्वांचे) सुख
वा	Vaa	or	अथवा	तसेच
यदि	Yadi	if	अगर	जरी
वा	Vaa	or	भी	अथवा
दुःखम्	DuHkham	pain	दुःख को	दुःख (सुद्धा आपल्याप्रमाणे समान दृष्टीने पाहतो)
सः	SaH	he	वह	तो
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
परमः	ParamaH	supreme	परम श्रेष्ठ	अत्यंत श्रेष्ठ
मतः	MataH	is regarded / considered	माना गया है	मानला जातो

अन्वय :-

हे अर्जुन ! यः आत्मौपम्येन सर्वत्र सुखम् वा यदि वा दुःखम् समम् पश्यति, सः योगी परमः मतः ॥ ६ - ३२ ॥

English translation:-

O Arjuna! That Yogi is considered as the Supreme, who sees equality everywhere be it in pleasure and / or pain, by the same yardstick / standard as he applies to himself.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो योगी सब को अपने जैसा ही समझे और सर्वत्र दुःख और सुख को समान अनुभव करे, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! जो योगी आपल्या सारखेच सुख आणि दुःख सर्व प्राणिमात्रांना होते असे जाणतो ; तो योगी परमश्रेष्ठ मानला जातो .

विनोबांची गीताई :-

ज़ो आत्मौपम्य बुद्धीनें सर्वत्र सम पाहतो।

ज़से सुख तसें दुःख तो योगी स्थिर मानिला ॥ ६ - ३२ ॥

अर्जुन उवाच ।

यः अयम् योगः त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।

एतस्य अहम् न पश्यामि चञ्चलत्वात् स्थितिम् स्थिराम् ॥ ६ - ३३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjun	अर्जुन (ने)	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाला
यः	YaH	he who	जो	जो
अयम्	Ayam	this	यह	हा
योगः	YogaH	Yoga	योग	योग
त्वया	Tvayaa	by you	आप ने	तुम्ही
प्रोक्तः	ProktaH	taught	कहा है	मला सांगितला
साम्येन	Saamyena	by equanimity	समभाव से	समभावाने
मधुसूदन	Madhu-Soodana	O Krishna!	हे मधु राक्षस का वध करने वाले श्रीकृष्ण !	हे मधुसूदना !
एतस्य	Etasya	of this	इसकी	याची (म्हणजेच मनाची)
अहम्	Aham	I	मैं	मी
न	Na	not	नहीं	नाही
पश्यामि	Pashyaami	see	देखता हूँ	पाहतो
चञ्चलत्वात्	Chanchalatvaat	from restlessness	(वह मनके) चञ्चल होनेसे	(परंतु माझ्या मनाच्या) चंचलपणामुळे
स्थितिम्	Sthitim	continuance	स्थिति को	स्थिती
स्थिराम्	Sthiraam	stability	नित्य	स्थिर

अन्वय :-

अर्जुन उवाच - हे मधुसूदन ! यः अयम् योगः त्वया साम्येन प्रोक्तः एतस्य स्थिराम् स्थितिम् चञ्चलत्वात् अहम् न पश्यामि ॥ ६ - ३३ ॥

English translation:-

Arjuna said, "O Krishna! This Yoga of equanimity, taught by you – I do not see its enduring stability owing to restlessness of my mind.

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने कहा, "हे मधु राक्षस का वध करने वाले श्रीकृष्ण! जो यह योग, आप ने समभाव का कहा है; वह मनके चञ्चल होने से, मैं इस की, नित्य स्थिति को नहीं देखता हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला, " हे मधुसूदना ! समत्वबुद्धीने प्राप्त होणारा जो हा योग मला तू सांगितलास ; तो माझ्यामध्ये स्थिर होण्याचा उपाय , मनाच्या चंचलपणामुळे मला दिसत नाही ."

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला

तूं बोलिलास जो आतां साम्य योग जनार्दना ।

न देखें स्थिरता त्याची या चंचळ मनामुळें ॥ ६ - ३३ ॥

चञ्चलम् हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढम् ।

तस्य अहम् निग्रहम् मन्ये वायोः इव सुदुष्करम् ॥ ६ - ३४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
चञ्चलम्	Chanchalam	restless	(बडा) चञ्चल	(फार) चंचल
हि	Hi	verily	क्योंकि	कारण
मनः	ManaH	mind	यह मन	मन
कृष्ण	KrishNa	O Krishna !	हे श्रीकृष्ण !	हे श्रीकृष्णा !
प्रमाथि	Pramaathi	turbulent	क्षोभ उत्पन्न करनेवाला	खळबळ निर्माण करणारे
बलवत्	Balavat	strong	(और) बलवान् है	(आणि) बलवान (आहे)
दृढम्	DruDham	obstinate / unyielding	बडा दृढ	अत्यंत हट्टी / नाठाळ
तस्य	Tasya	of it	(इसलिये) उसका	(म्हणून) त्याचा
अहम्	Aham	I	मैं	मी
निग्रहम्	Nigraham	control	वश में करना	निग्रह करणे (हे)
मन्ये	Manye	think	मानता हूँ	वाटते
वायोः	VaayoH	of wind	वायु को	वायूला
इव	Eva	as	(रोकने की) भाँति	(रोखण्या) प्रमाणे
सुदुष्करम्	SuduShkaram	difficult	अत्यन्त कठिन है	अत्यंत कठीण (आहे)

अन्वय :-

हे कृष्णा ! मनः बलवत् दृढम् चञ्चलम् प्रमाथि, अहम् हि तस्य निग्रहम् वायोः इव, सुदुष्करम् मन्ये ॥ ६ - ३४ ॥

English translation:-

O Krishna, the mind is verily restless, turbulent, strong and obstinate. I consider it as difficult to control as the wind.

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकि, हे श्रीकृष्ण ! यह मन बडा चञ्चल, क्षोभ उत्पन्न करनेवाला, बडा दृढ और बलवान् है। इसलिये, उसका वश में करना, मैं वायु को रोकने की भाँति, अत्यन्त कठिन मानता हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे श्रीकृष्णा ! मन हे चंचल, प्रक्षुब्ध होणारे, बलवान व अत्यंत हट्टी आहे. त्याला ताब्यात ठेवणे म्हणजे वाऱ्याची मोट बांधण्यासारखे अतिशय कठीण आहे.

विनोबांची गीताई :-

मन चंचळ हें कृष्णा हट्टी छळितसे बळें।
धावें वाऱ्यावरी त्याचा दिसे निग्रह दुष्कर ॥ ६ - ३४ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

असंशयम् महाबाहो मनः दुर्निग्रहम् चलम् ।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ६ - ३५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavaan	The Blessed Lord	भगवान् श्रीकृष्ण ने	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
असंशयम्	Asanshayam	undoubtedly	निःसन्देह	निःसंशयपणे
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed!	हे महाबाहो !	हे महापराक्रमी अर्जुना !
मनः	ManaH	mind	मन	मन (हे)
दुर्निग्रहम्	Durnigram	difficult to control	कठिनता से वश में होनेवाला है	आवरण्यास कठीण आहे
चलम्	Chalam	restless	चञ्चल (और)	चंचल (आणि)
अभ्यासेन	Abhyaasena	by practice	अभ्यास से	अभ्यासाने
तु	Tu	but	परंतु (यह मन)	परंतु (हे मन)
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे कुन्तीपुत्र अर्जुन !	हे कुंतीपुत्र अर्जुना !
वैराग्येण	VairaagyeNa	by dispassion	वैराग्य से	वैराग्याने
च	Cha	and	और	आणि
गृह्यते	Gruhyate	is controlled	वश में होता है	वश करून घेता येते / ताब्यात ठेवता येते

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - हे महाबाहो ! मनः असंशयम् चलम् दुर्निग्रहम्, हे कौन्तेय ! (तत्) तु अभ्यासेन वैराग्येण च गृह्यते ॥ ६ - ३५ ॥

English translation: -

The Blessed Lord said, "O mighty armed! Undoubtedly, the mind is restless and difficult to control; but by practice and non-attachment, O Arjuna, it can be controlled."

हिन्दी अनुवाद :-

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, " हे महाबाहो ! निःसन्देह, मन चञ्चल और कठिनता से वश में होनेवाला है; परंतु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन ! यह अभ्यास से और वैराग्य से वश में होता है।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " हे महापराक्रमी अर्जुना ! हे मन आवरण्यास कठीण व चंचल आहे यात काही संशय नाही. पण हे कुंतीपुत्रा ते अभ्यासाने व वैराग्याने ताब्यात ठेवता येते."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

अवश्य मन दुःसाध्य म्हणतोस तसें चि तें।

परी अभ्यास वैराग्यें त्याचा निग्रह होतसे ॥ ६ - ३५ ॥

असंयतात्मना योगः दुष्प्राप्यः इति मे मतिः ।

वश्यात्मना तु यतता शक्यः अवाप्तुम् उपायतः ॥ ६ - ३६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
असंयतात्मना	Asanyata-Aatmanaa	by one whose mind is uncontrolled	जिसका मन वश में किया हु आ नहीं है ऐसे पुरुषद्वारा	ज्याने मन वश करून घेतलेले नाही अशा पुरुषाला
योगः	YogaH	Yoga	योग	(हा) योग
दुष्प्राप्यः	DushpraapyaH	hard to attain	दुष्प्राप्य है	प्राप्त होण्यास कठीण आहे
इति	Iti	thus	यह	असे
मे	Me	my	मेरा	माझे
मतिः	MatiH	opinion	मत है	मत आहे
वश्यात्मना	Vashya-Aatmanaa	by one who is self controlled	वश में किये हुए मनवाले	ज्याने मन वश करून घेतले आहे (अशा)
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु (तो योग)
यतता	Yatataa	by striving	प्रयत्नशील पुरुषद्वारा	प्रयत्नशील पुरुषाला
शक्यः	ShakyaH	possible	सहज है	सहज शक्य आहे
अवाप्तुम्	Avaaptum	To attain	उसका प्राप्त होना	प्राप्त करून घेणे
उपायतः	UpaayataH	by (proper) means	साधन से	योग्य उपायांनी

अन्वय :- असंयतात्मना योगः दुष्प्राप्यः , वश्यात्मना यतता तु उपायतः अवाप्तुम् शक्यः , इति मे मतिः ॥ ६ - ३६ ॥

English translation: -

In my opinion, Yoga is hard to attain for a person who cannot control himself. However it (Yoga) can be attained by a person who has controlled himself (his mind, body and intellect) and who strives by proper means.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसका मन , वश में किया हुआ नहीं है , ऐसे पुरुषद्वारा योग दुष्प्राप्य है ; परन्तु मन को वश में किये हुए , प्रयत्नशील पुरुषद्वारा साधन से उसका प्राप्त होना सहज है , यह मेरा मत है ।

मराठी भाषान्तर :-

मनाला वश न करणाऱ्या पुरुषाला हा योग साधणे फार कठीण आहे . पण ज्याने आपल्या मनाला पूर्णपणे आटोक्यात ठेवले आहे व जो सतत त्याबाबतीत प्रयत्नशील आहे ; त्याला योग्य उपायांनी हा योग साधणे शक्य आहे , असे माझे प्रांजळ मत आहे .

विनोबांची गीताई :-

संयमाविण हा योग न साधे मानितों चि मी ।

परी संयमवंतास उपायें साध्य होतसे ॥ ६ - ३६ ॥

अर्जुन उवाच ।

अयतिः श्रद्धया उपेतः योगात् चलितमानसः ।

अप्राप्य योगसंसिद्धिम् काम् गतिम् कृष्ण गच्छति ॥ ६ - ३७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjuna	अर्जुन ने	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	पूछा	विचारले
अयतिः	Ayati	uncontrolled	संयमी नहीं है इस कारण अन्तकाल में	संयमी नसलेला
श्रद्धया - उपेतः	Shraddhayaa - UpetaH	Possessed by faith	जो योग में श्रद्धा रखनेवाला है (किंतु)	(जो योगावर) श्रद्धा ठेवणारा आहे (परंतु)
योगात्	Yogaat	from Yoga	योग से	योगापासून
चलितमानसः	Chalita-MaanasaH	one whose mind wanders away	जिसका मन विचलित हो गया है (ऐसा साधक योगी)	ज्याचे मन विचलित झाले आहे (अशा साधक योग्याला)
अप्राप्य	Apraapya	not having attained	न प्राप्त होकर	प्राप्त होणारा नाही
योगसंसिद्धिम्	Yoga-Sansiddhim	Perfection in Yoga	योग की सिद्धि को अर्थात् भगवत् साक्षात्कार को	योगाची सिद्धी (भगवत्साक्षात्कार)
काम्	Kaam	which	किस	(तो साधक) कोणती
गतिम्	Gatim	end	गति को	गती
कृष्ण	KriShNa	O Krishna!	हे श्रीकृष्ण !	हे श्रीकृष्णा !
गच्छति	Gachchhati	meets / goes	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- अर्जुन उवाच - हे कृष्ण ! श्रद्धया उपेतः अयतिः , योगात् चलितमानसः, योगसंसिद्धिम् अप्राप्य , काम् गतिम् गच्छति ? ॥ ६ - ३७ ॥

English translation:-

Arjuna said, "He who is unable to control himself, though possessed of faith, whose mind deviates from Yoga, O Krishna, what end does he meet with after having failed to attain perfection in Yoga?

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने पूछा , " हे श्रीकृष्ण ! श्रद्धालु परन्तु असंयमी व्यक्ति , जो योग मार्ग से विचलित हो जाता है , ऐसा साधक , योग की सिद्धि को न प्राप्तकर , किस गति को प्राप्त होता है ? "

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला , " हे श्रीकृष्णा ! श्रद्धेने युक्त आहे पण विशेष प्रयत्न किंवा संयमन होत नाही म्हणून ज्याचे चित्त योगापासून ढळते ; तो साधक योगसिद्धी न पावता कोणत्या गतीला जातो ."

विनोबांची गीताई :-

श्रद्धा आहे नव्हे यत्न योगांतूनि चळूनि ज़ो ।

मुकला योग सिद्धीस ज़ाय कोण्या गतीस तो ॥ ६ - ३७ ॥

कच्चित् न उभयविभ्रष्टः छिन्न अभ्रम् इव नश्यति ।

अप्रतिष्ठः महाबाहो विमूढः ब्रह्मणः पथि ॥ ६ - ३८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कच्चित्	Kachchit	Is it that?	क्या वह	तर मग
न	Na	not	नहीं	नाही
उभयविभ्रष्टः	Ubhaya-VibhraShTaH	fallen from both	दोनो ओरसे भ्रष्ट होकर	दोन्हींकडून भ्रष्ट होऊन
छिन्न - अभ्रम्	ChhinnaH - Abhram	rent / broken cloud	छिन्न भिन्न बादल की	छिन्न भिन्न झाले ला ढग
इव	Eva	like	भाँति	प्रमाणे
नश्यति	Nashyati	perishes	नष्ट हो जाता ?	नष्ट होऊन जातो ?
अप्रतिष्ठः	ApratiShThaH	support-less	आश्रयरहित पुरुष	आश्रयरहित पुरुष
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed	हे महाबाहो !	हे कृष्णा !
विमूढः	VimuuDhaH	deluded	मोहित	मोहित
ब्रह्मणः	BrahmaNaH	of Brahman	भगवत्प्राप्ति के	तो भगवत्प्राप्तीच्या
पथि	Pathi	in path	मार्ग में	मार्गावर

अन्वय :- हे महाबाहो ! ब्रह्मणः पथि अप्रतिष्ठः विमूढः (सः) उभयविभ्रष्टः छिन्न अभ्रम् इव न नश्यति कच्चित् ? ॥ ६ - ३८ ॥

English translation:-

O mighty armed; having fallen from both Bhoga and Yoga, does he not perish like a rent cloud without any support system and deluded in the path of Brahman?

हिन्दी अनुवाद :-

हे महाबाहो ! क्या वह भगवत्प्राप्ति के मार्ग में मोहित और आश्रयरहित पुरुष, छिन्न - भिन्न बादल की भाँति, दोनों से (भोग और योग से वंचित रहकर) भ्रष्ट होकर, नष्ट तो नहीं हो जाता ?

मराठी भाषान्तर :-

हे पराक्रमी श्रीकृष्णा ! ब्रह्मप्राप्तीच्या मार्गात अज्ञानाने स्थिर न झाल्याने, दोन्ही (भोग आणि योग) बाजूंनी ढळलेला तो पुरुष फुटलेल्या ढगाप्रमाणे, नाश तर पावत नाही ना ?

विनोबांची गीताई :-

काय तो उभय - भ्रष्ट ब्रह्म - मार्गीं भुलुनियां ।
नाश पावे निराधार फुटलेल्या ढगापरी ॥ ६ - ३८ ॥

एतत् मे संशयम् कृष्ण छेत्तुम् अर्हसि अशेषतः ।

त्वत् अन्यः संशयस्य अस्य छेत्ता न हि उपपद्यते ॥ ६ - ३९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एतत्	Etat	this	इस	हा
मे	Me	my	मेरे	माझा
संशयम्	Sanshayam	doubt	संशय को	संशय
कृष्ण	KriShNa	O Krishna	हे श्रीकृष्ण !	हे श्रीकृष्णा !
छेत्तुम्	Chhettum	to dispel	छेदन करने के लिये आप ही	निरसन करण्यासाठी
अर्हसि	Arhasi	(you) ought to	योग्य हैं	(तुम्ही) समर्थ आहात
अशेषतः	AsheShataH	completely	सम्पूर्णरूप से	संपूर्णपणे
त्वत्	Tvat	you	आपके	तुमच्याशिवाय
अन्यः	AnyaH	other than	सिवा दूसरा	दुसरा कोणी
संशयस्य	Sanshayasya	of doubt	संशय का	संशयाचा
अस्य	Asya	this	इस	या
छेत्ता	Chhettaa	dispeller	छेदन करनेवाला	तोडून टाकणारा
न	Na	not	नहीं	नाही
हि	Hi	verily / indeed	क्योंकि	कारण
उपपद्यते	Upapadyate	is fit	मिलना सम्भव है	मिळणे शक्य

अन्वय :- हे कृष्ण ! मे एतत् संशयम् अशेषतः छेत्तुम् अर्हसि ; हि त्वत् अन्यः अस्य संशयस्य छेत्ता न उपपद्यते ॥ ६ - ३९ ॥

English translation:-

O Krishna! This doubt of mine, you should dispel completely, for there is none other than you to dispel this doubt.

हिन्दी अनुवाद :-

हे श्रीकृष्ण ! मेरे इस संशय को , सम्पूर्ण रूप से दूर करने में , आप ही सक्षम हैं ; क्योंकि आप के सिवा दूसरा कोई भी , इस संशय को दूर करनेवाला मिलना सम्भव नहीं है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे कृष्णा ! माझ्या संशयाचे पूर्णपणे निरसन करण्यास तुम्हीच योग्य आहात . तुमच्यावाचून या संशयाचे निराकरण करणारा दुसरा कोणी मिळणार नाही .

विनोबांची गीताई :-

माझा संशय हा कृष्णा तूं चि फेडीं मुळांतुनी ।
फेडीलसा दुजा कोणी न दिसे चि तुझ्याविण ॥ ६ - ३९ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

पार्थ न एव इह न अमुत्र विनाशः तस्य विद्यते ।

न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिम् तात गच्छति ॥ ६ - ४० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavaan	The Blessed Lord	भगवान् श्रीकृष्ण ने	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
न	Na	not	न तो	नाही
एव	Eva	verily / indeed	ही	खरोखर / केवळ
इह	Iha	here	इस लोक में	या (लोकात)
न	Na	not	न तो	नाही
अमुत्र	Amutra	hereafter / in the next world	परलोक में	परलोकातही (त्याचा विनाश)
विनाशः	VinaashaH	destruction	विनाश	विनाश
तस्य	Tasya	his	उस पुरुष का	त्याचा (पुरुषाचा)
विद्यते	Vidyate	is	होता है और	होतो (तसेच)
न	Na	Not	नहीं	नाही
हि	Hi	verily	क्योंकि	कारण
कल्याणकृत्	KalyaaNa-Krut	one who does good	आत्मोद्धारके लिये अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिये कर्म करनेवाला	(आत्मोद्धारासाठी म्हणजे भगवत्प्राप्तीसाठी) शुभाचरण करणारा
कश्चित्	Kashchit	if anyone	कोई भी मनुष्य	कोणीही (पुरुष)
दुर्गतिम्	Durgatim	Bad state or to grief	दुर्गति को	वाईट गतीला
तात	Taata	O my beloved !	हे प्यारे !	अरे बाबा !
गच्छति	Gachhati	goes	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - हे पार्थ ! न इह न एव (च) अमुत्र तस्य विनाशः विद्यते । हे तात ! कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिम् गच्छति न हि ॥ ६ - ४० ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "O Arjuna, neither in this world nor in the next world is there destruction for him; for one who does good, O my beloved, he never comes to grief."

हिन्दी अनुवाद :-

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, " हे अर्जुन ! उस पुरुष का, न तो इस लोक में विनाश होता है और न परलोक में ही; क्योंकि, हे प्रिय ! आत्मोद्धार के लिये अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिये कर्म करनेवाला, कोई भी मनुष्य, दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, "हे अर्जुना ! या लोकी तसेच परलोकी सुद्धा त्याचा विनाश होत नाही . बाबा रे ! शुभ कार्य करणारा कोणीही केव्हाही वाईट गतीला जात नाही ."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

न ह्या लोकीं न त्या लोकीं नाश तो पावतो कधीं ।

शुभकारी कुणी बापा दुर्गतीस न ज़ातसे ॥ ६ - ४० ॥

प्राप्य पुण्यकृताम् लोकान् उषित्वा शाश्वतीः समाः ।

शुचीनाम् श्रीमताम् गेहे योगभ्रष्टः अभिजायते ॥ ६ - ४१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्राप्य	Praapya	having attained	प्राप्त होकर	प्राप्त करून
पुण्यकृताम्	PuNyakrutaam	of the righteous	पुण्यवानों के	पुण्यवान माणसांचे
लोकान्	Lokaan	worlds	लोकों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोकों को	लोक म्हणजे स्वर्गादी उत्तम लोक
उषित्वा	UShitvaa	having dealt	निवास कर फिर	(या लोकी) राहून
शाश्वतीः	ShaashvateeH	eternal	उन में बहुत	पुष्कळ
समाः	SamaaH	years	वर्षों तक	वर्षांपर्यंत
शुचीनाम्	Shuchinaam	of the pure	शुद्ध आचरणवाले	शुद्ध आचरण असणाऱ्या
श्रीमताम्	Shreemataam	of the wealthy	श्रीमान् पुरुषों के	श्रीमंत पुरुषांच्या
गेहे	Gehe	in home	घर में	घरामध्ये
योगभ्रष्टः	Yoga-BhraShTaH	one fallen from Yoga	योगभ्रष्ट पुरुष	योगभ्रष्ट पुरुष (हा)
अभिजायते	Abhijaayate	is born	जन्म लेता है	जन्म घेतो

अन्वय :- योगभ्रष्टः पुण्यकृताम् लोकान् प्राप्य , (तत्र) शाश्वतीः समाः उषित्वा , शुचीनाम् श्रीमताम् गेहे अभिजायते ॥ ६ - ४१ ॥

English translation: - Having attained to the worlds of the righteous and having lived there for countless years, he who had fallen from Yoga; is reborn in the house of the pure and wealthy family.

हिन्दी अनुवाद :-

योगभ्रष्ट पुरुष , पुण्यवानों के लोकों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त होकर , उन में बहुत वर्षों तक निवास कर , फिर शुद्ध आचरणवाले धनवान् पुरुषों के घर में जन्म लेता है ।

मराठी भाषान्तर :-

योगभ्रष्ट पुरुष , पुण्यकर्मे करणाऱ्या लोकांना लाभणाऱ्या स्वर्गादी उत्तम लोकांना पोचून , तेथे हजारो वर्षे राहून ; शुद्ध आचरणाने संपन्न अशा श्रीमंत लोकांच्या घरी जन्म घेतो .

विनोबांची गीताई :-

पुण्य - लोकांत राहूनि तो योग - भ्रष्ट संतत ।
शुचि साधनवंतांच्या घरीं जन्मास येतसे ॥ ६ - ४१ ॥

अथवा योगिनाम् एव कुले भवति धीमताम् ।

एतत् हि दुर्लभतरम् लोके जन्म यत् ईदृशम् ॥ ६ - ४२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अथवा	Athavaa	or	अथवा (वैराग्यवान् पुरुष उन लोकों में न जाकर)	किंवा (वैराग्यवान पुरुष त्या स्वर्गादी लोकांत न जाता)
योगिनाम्	Yogeenaam	of Yogis	योगियों के	योग्यांच्या
एव	Eva	only	ही	केवळ
कुले	Kule	in family	कुल में	कुळामध्ये
भवति	Bhavati	is born	जन्म लेता है (परन्तु)	जन्म घेतो (परंतु)
धीमताम्	Dheemataam	of wise	ज्ञानवान्	ज्ञानवान
एतत्	Etat	this	यह	हा
हि	Hi	verily / indeed	निःसन्देह	निःसंशयपणे
दुर्लभतरम्	Durlabhataram	very difficult	अत्यन्त दुर्लभ (है)	अत्यंत दुर्लभ (आहे)
लोके	Loke	in the world	इस संसार में	या जगात
जन्म	Janma	birth	जन्म	जन्म
यत्	Yat	which	जो (जन्म है वह)	जो (जन्म आहे तो)
ईदृशम्	Iidrusham	like this	इस प्रकार का	अशा प्रकारचा

अन्वय :- अथवा धीमताम् योगिनाम् एव कुले भवति, यत् एतत् ईदृशम् जन्म लोके दुर्लभतरम् हि ॥ ६ - ४२ ॥

English translation: -

Or he is born in the family of wise yogis only; verily a birth like this is very difficult to obtain in this world.

हिन्दी अनुवाद :-

अथवा वैराग्यवान् पुरुष, उन लोकों में न जाकर, ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में, जन्म लेता है ; परन्तु इस प्रकार का जन्म इस संसार में निःसन्देह, अत्यन्त दुर्लभ है।

मराठी भाषान्तर :-

अथवा तो (योगभ्रष्ट योगी) बुद्धिमान योग्यांच्या कुळात जन्माला येतो. अशा प्रकारचा जन्म या लोकी अतिशय दुर्मिळ आहे.

विनोबांची गीताई :-

अथवा प्राज्ञ योग्यांच्या कुळीं चि मग जन्मतो।

अवश्य हा असा जन्म लोकीं अत्यंत दुर्लभ ॥ ६ - ४२ ॥

तत्र तम् बुद्धिसंयोगम् लभते पौर्वदेहिकम् ।

यतते च ततः भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥ ६ - ४३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्र	Tatra	there	वहाँ	तेथे
तम्	Tam	that	उस	त्या
बुद्धिसंयोगम्	Buddhi-Sanyogam	union with knowledge	बुद्धि के संयोग को अर्थात् समबुद्धिरूप योग के संस्कारों को	बुद्धीचा संयोग (म्हणजे समबुद्धिरूप योगाचा संस्कार)
लभते	Labhate	obtains / acquires	अनायास ही प्राप्त हो जाता है	(अनायासे) मिळवितो
पौर्वदेहिकम्	Paurva-Dehikam	acquired in his former body	पहले शरीर में संग्रह किये हुए	पूर्वीच्या शरीरात संपादन केलेला
यतते	Yatate	strives	प्रयत्न करता है	प्रयत्न करतो
च	Cha	and	और	आणि
ततः	TataH	than that	उसके प्रभाव से वह	त्याच्या प्रभावामुळे (तो)
भूयः	BhuuyaH	more	फिर पहले से भी बढ़कर	(पूर्वीपेक्षा) अधिक (मोठ्या उत्साहाने)
संसिद्धौ	Sansiddhau	for perfection	परमात्मा की प्राप्तिरूप सिद्धि के लिये	(परमात्म्याच्या प्राप्तिरूप) सिद्धीच्यासाठी
कुरुनन्दन	Kuru-Nandana	O son of Kurus!	हे कुरुनन्दन !	हे कुरुनंदना !

अन्वय :- हे कुरुनन्दन ! (सः) तत्र तम् पौर्वदेहिकम् बुद्धिसंयोगम् लभते, ततः च भूयः संसिद्धौ यतते ॥ ६ - ४३ ॥

English translation:-

O Arjuna! There, united with the knowledge acquired in his former body, he strives more than before for perfection.

हिन्दी अनुवाद :-

वहाँ, उस पहले शरीर में तथा पूर्वजन्म में, संग्रह किये हुए बुद्धि के संयोग को अर्थात् समबुद्धिरूप योग के संस्कारों को, अनायास ही प्राप्त हो जाता है; और हे कुरुनन्दन! उस के प्रभाव से, वह फिर, परमात्मा की प्राप्तिरूप सिद्धि के लिये, पहले से भी बढ़कर, प्रयत्न करता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुरुनंदना अर्जुना ! तेथे त्याला पूर्वजन्मातला बुद्धिसंस्कार प्राप्त होतो आणि तो पुन्हा अधिक ज्ञानसिद्धी व योगसिद्धी मिळविण्याचा जोमाने प्रयत्न करतो.

विनोबांची गीताई :-

तिथें तो पूर्व जन्मींचा बुद्धि संस्कार जोडुनी।
मोक्षार्थ करितो यत्न पूर्वीहूनि पुढें पुन्हां ॥ ६ - ४३ ॥

पूर्वाभ्यासेन तेन एव ह्रियते हि अवशः अपि सः ।

जिज्ञासुः अपि योगस्य शब्दब्रह्म अतिवर्तते ॥ ६ - ४४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पूर्व - अभ्यासेन	Puurva-Abhyaasena	by former practice	पहले के अभ्यास से	पूर्व जन्मातील अभ्यासामुळे
तेन	Tena	by that	उस	त्या
एव	Eva	alone	ही	केवळ
ह्रियते	Hriyate	is borne	आकर्षित किया जाता है	खेचला जातो
हि	hi	verily / indeed	निःसन्देह (भगवान् की ओर)	निःसंशयपणे (भगवंतांकडे)
अवशः	AvashaH	helpless	पराधीन हुआ	पराधीन होऊन
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
सः	SaH	he	वह (धनवानों के घर में जन्म लेनेवाला योगभ्रष्ट)	तो (श्रीमंताच्या घरात जन्मलेला योगभ्रष्ट योगी)
जिज्ञासुः	JidnyaasuH	one who wishes to know	जिज्ञासु	जाणण्याची इच्छा असणारा
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
योगस्य	Yogasya	of Yoga	तथा समबुद्धिरूप योग का	(समबुद्धिरूप) योगाचा
शब्दब्रह्म	Shabda-Brahma	word - Brahman	वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को	शब्दब्रह्म
अतिवर्तते	Ati-Vartate	goes beyond	उल्लङ्घन कर जाता है	उल्लंघन करून जातो

अन्वय :- तेन एव पूर्वाभ्यासेन ह्रियते हि अवशः अपि सः जिज्ञासुः अपि योगस्य शब्दब्रह्म अतिवर्तते ॥ ६ - ४४ ॥

English translation:-

By that former practice alone, he is borne irresistibly. Even merely wishing to know Yoga he goes beyond the word Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

वह स्वाभाविक, अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के द्वारा, परमात्मा की ओर, सहज ही आकर्षित हो जाता है। भगवत्प्राप्ति का जिज्ञासु भी, वेद में कहे हुए, सकाम कर्मफल की प्राप्ति से आगे का फल, प्राप्त कर लेता है।

मराठी भाषान्तर :-

जरी तो विषयांच्या अधीन झाला असेल तरी देखील पूर्वजन्मीच्या अभ्यासाने तो योगाभ्यासाकडे खेचला जातो. योगाचे स्वरूप जाणण्याची इच्छा करणाराही, ब्रह्म या शब्दाच्या पलीकडे जातो.

विनोबांची गीताई :-

पूर्वाभ्यास - बळानें तो खेंचला पर - तंत्र चि।
जिज्ञासेनें हि योगाच्या ज़ातो वेदांस लंघुनी ॥ ६ - ४४ ॥

प्रयत्नात् यतमानः तु योगी संशुद्ध किल्बिषः ।

अनेक - जन्मसंसिद्धः ततः याति पराम् गतिम् ॥ ६ - ४५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रयत्नात्	Prayatnaat	with assiduity	प्रयत्नपूर्वक	प्रयत्नपूर्वक
यतमानः	YatamaanaH	striving	अभ्यास करनेवाला	अभ्यास करणारा
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
योगी	Yogee	Yogi	योगी तो	योगी (हा)
संशुद्ध	Sanshuddha	purified from	रहित होकर	शुद्ध होऊन
किल्बिषः	KilbiShaH	sins	सम्पूर्ण पापों से	पापांनी
अनेक	Aneka	many	पिछले अनेक	(तर मागील) अनेक
जन्मसंसिद्धः	Janma-SansiddhaH	perfected through births	जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर	जन्मांच्या संस्कारांच्या संचयसामर्थ्यामुळे (याच जन्मात सम्यक ज्ञान प्राप्त होऊन)
ततः	TataH	then	फिर	नंतर
याति	Yaati	goes	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करून घेतो
पराम्	Paraam	supreme	परम	श्रेष्ठ
गतिम्	Gatim	goal	गति को	गतीला

अन्वय :- ततः प्रयत्नात् यतमानः संशुद्ध - किल्बिषः योगी तु अनेक - जन्मसंसिद्धः पराम् गतिम् याति ॥ ६ - ४५ ॥

English translation:-

But the Yogi striving with assiduity, completely purified of sins, perfected through many births and then reaches the Supreme Goal.

हिन्दी अनुवाद :-

प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करनेवाला योगी , पिछले अनेक जन्मों से धीरे - धीरे शुद्ध होता हुआ , सारे पापों से रहित होकर , परमगति अर्थात् मुक्ति को , प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

तेथून पुढे प्रयत्नपूर्वक योगसाधना करीत करीत पापमुक्त होऊन अतिशय शुद्ध झालेला तो योगी अनेक जन्मात सिद्धी प्राप्त करून घेत घेत अखेर उत्तमगतीस पोचतो - मोक्ष मिळवितो .

विनोबांची गीताई :-

योगी तत्पर राहूनी दोष ज़ाळित ज़ाळित ।
अनेक जन्मीं संपूर्ण होउनी मोक्ष पावतो ॥

तपस्विभ्यः अधिकः योगी ज्ञानिभ्यः अपि मतः अधिकः ।

कर्मिभ्यः च अधिकः योगी तस्मात् योगी भव अर्जुन ॥ ६ - ४६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तपस्विभ्यः	TapasvibhyaH	than ascetics	तपस्वियों से	तपस्वी लोकांपेक्षा
अधिकः	AdhikaH	superior	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ (आहे)
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
ज्ञानिभ्यः	DnyaanibhyaH	than wise	शास्त्रज्ञानियों से	ज्ञानी पुरुषांपेक्षा
अपि	Api	even	भी	ही
मतः	MataH	thought	माना गया है	मानला गेला आहे
अधिकः	AdhikaH	superior	श्रेष्ठ	(तो) श्रेष्ठ
कर्मिभ्यः	KarmibhyaH	than performers of action	सकाम कर्म करनेवालों से भी	सकाम कर्म करणाऱ्या माणसांपेक्षाही
च	Cha	and	और	आणि
अधिकः	AdhikaH	superior	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ (आहे)
योगी	Yogee	Yogi	योगी	योगी
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इसलिये	म्हणून
योगी	Yogee	Yogi	(तुम) योगी	(तू) योगी
भव	Bhava	be	बनो	हो
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :-

योगी तपस्विभ्यः अधिकः, ज्ञानिभ्यः अपि अधिकः मतः, योगी कर्मिभ्यः च अधिकः, तस्मात् हे अर्जुन ! (त्वम्) योगी भव ॥ ६ - ४६ ॥

English translation:-

The Yogi is deemed to be superior to the ascetics, superior even to the wise and superior to performers of action. Therefore, try to become a Yogi, O Arjuna!

हिन्दी अनुवाद :-

योगी सकाम भाववाले तपस्वियों से श्रेष्ठ है, योगी शास्त्रज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करनेवालों से भी योगी श्रेष्ठ है; इसलिये हे अर्जुन ! तुम योगी बनो ।

मराठी भाषान्तर :-

तपस्व्यांपेक्षा योगी श्रेष्ठ, ज्ञानी लोकांपेक्षाही योगी श्रेष्ठ आणि सकाम कर्म करणाऱ्या कर्मठ लोकांपेक्षाही योगी श्रेष्ठ आहे. म्हणून, हे अर्जुना, तू योगी हो.

विनोबांची गीताई :-

ज्ञानी तापस कर्मिष्ठ ह्या सर्वांहूनि आगळा ।
मानिला तो असे योगी योगी होई म्हणूनि तूं ॥ ६ - ४६ ॥

योगिनाम् अपि सर्वेषाम् मद् - गतेन अन्तः आत्मना ।

श्रद्धावान् भजते यः माम् सः मे युक्ततमः मतः ॥ ६ - ४७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
योगिनाम्	Yogeenaam	of Yogis	योगियों में	योग्यांमध्ये
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
सर्वेषाम्	SarveShaam	of all	सम्पूर्ण	सर्व
मद् - गतेन	Mad - Gatena	merged in Me	मुझ में लगे हुए	माझ्या ठिकाणी लावलेल्या
अन्तः	AntaH	with inner	अन्तर	अंतर
आत्मना	Aatmanaa	Self	आत्मा से	आत्म्याने
श्रद्धावान्	Shraddhaavaan	endued with faith	श्रद्धावान् (योगी)	श्रद्धावान (योगी)
भजते	Bhajate	worships	(निरन्तर) भजता है	(अखंड) भजतो
यः	YaH	he who	जो	जो
माम्	Maam	to Me	मुझ को	मला
सः	SaH	he	वह (योगी)	तो (योगी)
मे	Me	by Me	मुझे	मला
युक्ततमः	YuktatamaH	wholly united / most devout	परमश्रेष्ठ	परमश्रेष्ठ (म्हणून)
मतः	MataH	thought	मान्य है	मान्य आहे

अन्वय :- सर्वेषाम् अपि योगिनाम् यः श्रद्धावान् , मद् - गतेन अन्तः - आत्मना माम् भजते , सः मे युक्ततमः मतः ॥ ६ - ४७ ॥

English translation: -

Among all Yogis, he who with his inner self absorbed in Me, worships Me with abiding faith, he is considered by Me to be the most devout.

हिन्दी अनुवाद :-

सर्व योगियों में भी , जो योगी - भक्त मुझ में तल्लीन होकर , श्रद्धापूर्वक मेरी उपासना करता है ; वही मेरे मत से सर्वश्रेष्ठ है ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व योग्यांमध्ये जो श्रद्धावान योगी माझ्या ठिकाणी मन लावून श्रद्धेने मला भजतो ; तोच मला परमश्रेष्ठ वाटतो .

विनोबांची गीताई :-

सर्व योग्यांमध्यें योगी जीव माझ्यांत ठेवुनी ।
श्रद्धेनें भजतो मातें तो थोर मज वाटतो ॥ ६ - ४७ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ध्यानयोगो (आत्मसंयमयोगो) नाम षष्ठोऽध्यायः ॥
हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the sixth discourse designated as "the Yoga of Meditation (Self Control)".

सहाव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

चित्ताचा सखया निरोध करणें हा योग मानी खरा ।
हा मी हा पर भेद हा कधि नसे चित्ती मुळी ज्या नरा ॥
जो सप्रेम सदा भजे मज तसा जो सर्व भूतीं सम ।
ठेवी मद् - गत चित्त त्याहुनि दुजा योगी नसे उत्तम ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।
पडतां रडतां घेई उचलुनि कडेवरी ॥